 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

गुरमति ज्ञान

(धर्म प्रचार कमेटी का मासिक पत्र)

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४१-४२
मार्च 2010 वर्ष ३ अंक ७

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए, एम. एम. सी.*
सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए (हिंदी, पंजाबी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव
धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन : 0183-2553956-57-58-59



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303**
संपादन विभाग **304**

फैक्स : 0183-2553919

e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

पत्रिका प्राप्त न होने पर तथा चंदे आदि सम्बंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए मोबाइल नं. ***98886-38618*** *पर सम्पर्क किया जा सकता है।*

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥
आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥रहाउ॥
आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥
मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥
सगली रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥
बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥१॥ *(पन्ना ११८०)*

बसंत राग के इस पावन शबद में बाणी के बोहिथ श्री गुरु अरजन देव जी मानवी हृदय में प्रभु के पवित्र नाम बस जाने से उत्पन्न आत्मिक आनंद की अवस्था का वर्णन बसंत ऋतु तथा इसमें खेली जाने वाली होली के दृश्यों, बिंबों एवं प्रतीकों के माध्यम से करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि मैं आत्मिक मार्ग दर्शाने वाले गुरु की सेवा करते हुए उसको नमन करूं, क्योंकि गुरु द्वारा मार्गदर्शन किये जाने से, प्रभु का नाम हृदय में बस जाने से मन-अंतर में खुशी का गीत गायन हो रहा है, बहुत बड़ा आनंद बन गया है, फिक्र उतर गया है, परमात्मा के साथ साक्षात्कार (मिलाप) हो गया है।

गुरु जी कथन करते हैं कि मेरे हृदय रूप घर में बसंत ऋतु बरत रही है। हे प्रभु! आप बेअंत हो। आपकी कृपा से ही मैं आपके गुण गायन कर रहा हूं।

हे भाई! फाल्गुन मास का उल्लासपूर्ण वातावरण बन चुका है। परमात्मा के नाम की महिमा पर विचार करने वाले साथी मानो होली खेल रहे हों। सतिगुरु की सेवा करने अथवा सतिगुरु का निर्मल उपदेश मानने ने होली का माहौल बना दिया है। मन-आत्मा पर प्रभु-प्यार का गूढ़ा रंग चढ़ गया है, तन-मन खिल उठे हैं अर्थात् शारीरिक निरोगता और मानसिक खुशी दोनों मिल गए हैं, दोनों सुंदर हो गए हैं। सांसारिक सुख-दुख की धूप-छाया का बुरा प्रभाव अब मन, तन, आत्मा पर नहीं पड़ सकेगा। अब बाहरी तौर पर अन्य ऋतुओं के आने पर भी अंतरीव रूप से बसंत ऋतु बरतेगी, सभी ओर हरियाली होगी। गुरु से सच्चा आत्मिक ज्ञान अनुभव मिल जाने से सदैव बसंत हो जाती है।

श्री गुरु अरजन देव जी कथन करते हैं कि सभी कामनायें पूर्ण करने वाला पारजात वृक्ष फल-फूल रहा है, मन-आत्मा पूर्णत: तृप्त हो गए हैं तथा मन-आत्मा मात्र प्रभु-गुण गायन कर रहे हैं और परमात्मा को ही चितारा जा रहा है।





आओ! सिक्ख आन-शान के प्रतीक सरदार बघेल सिंघ को स्मरण करें

सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा दर्शाये हक-सच के मार्ग पर चलते हुए गुरु नानक नाम-लेवा सिक्खों तथा साहिबे-कमाल श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज के साजे-नवाजे खालसा पंथ ने जहां अत्यंत कठिन परिस्थितियों में अपने अस्तित्व को कायम रखा वहां दीन-दुखियों को भी सुरक्षा प्रदान की। तत्कालीन अत्याचारी शासन के बदल के रूप में एक जनहित वाले लोक-कल्याणकारी शासन की स्थापना हेतु गुरु साहिबान के समय के पश्चात बाबा बंदा सिंघ बहादर से लेकर महाराजा रणजीत सिंघ तक अनेक नामवर सिक्ख अगुआ हुए जिनमें सरदार बघेल सिंघ का नाम बड़े ही सत्कार के साथ स्मरण किया जाता है। सरदार बघेल सिंघ ने सिक्ख आन-शान तथा खालसायी जाहो-जलाल को अधिक से अधिक बढ़ावा देते हुए जीवन पर्यंत बहुत भरपूर प्रयास किये। सरदार बघेल सिंघ द्वारा किये गए प्रयासों और साकार की गयी पंथक कारगुजारियों को बहुत मीठे फल लगे। गुरु साहिबान की पावन स्मृति में दिल्ली में स्थित पावन ऐतिहासिक स्थानों को पंथक आन-शान, जाहो-जलाल सहित मूर्तिमान करना सरदार बघेल सिंघ का एक ऐसा महान कार्य तथा कारनामा है जिसको सदैव स्मरण किया जाता रहेगा।

सरदार बघेल सिंघ का सारा जीवन सिक्ख पंथ के गौरव को स्थापित करने हेतु समर्पित रहा। बारह सिक्ख मिसलों में एक मिसल थी करोड़सिंघिया। इस मिसल के मुखिया सरदार करोड़ा सिंघ थे। सरदार करोड़ा सिंघ की अपनी औलाद न थी। युवक बघेल सिंघ की पंथक भावना, उसके दिन-ब-दिन निखर रहे व्यक्तित्व और अगुआई के गुणों को देखते हुए सरदार करोड़ा सिंघ ने युवक बघेल सिंघ को अपना उत्तराधिकारी बनाया। मिसल की बागडोर संभाल कर जहां आप ने मिसल का नाम चमकाया वहां सर्वसांझे पंथक हितों के लिए बहुत भरपूर योगदान डाला। सरदार बघेल सिंघ की राजनैतिक गतिविधियों और प्राप्तियों का जिक्र मात्र भी एक बहुत बड़े आलेख का विषय-वस्तु है। यहां कुछ एक प्राप्तियों का ही संकेतक उल्लेख किया जा सकता है।

सन् १७६५ में आप ने नजीबुदौला के विरुद्ध राजा जवाहर मल की सहायता की। अब्दाली के आठवें आक्रमण का आपके जत्थे ने अद्वितीय साहस के साथ सामना किया। इस आक्रमण के दौरान बटाला में अब्दाली के डेरे को लूटना सरदार बघेल सिंघ की अत्यंत गौरवशाली प्राप्ति है। आक्रमणकारियों और आतंकियों को सोधना गुरु के सिंघों के हिस्से आया है। जब नौवें आक्रमण के समय अब्दाली ने सियालकोट की लूट-पाट के साथ-साथ हिंदु-स्त्रियों को बंदी बनाया तो सरदार बघेल सिंघ ने सरदार जस्सा सिंघ और सरदार चढ़त सिंघ का साथ देते हुए अब्दाली पर आक्रमण किया। इस आक्रमण में सभी बंदी स्त्रियों को बंधन-मुक्त करा कर स्वयं के खर्चे पर तथा तमाम कोशिशों और भरपूर प्रयास करके विवश व लाचार स्त्रियों को उनके घरों में पहुंचाना श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साजे-नवाजे खालसा पंथ की एक ऐसी प्राप्ति है जिसका उदाहरण विश्व-इतिहास

में अन्य कहीं नहीं मिलता। सरदार बघेल सिंघ की जत्थेदारी तले ही सिक्खों ने यमुना के पार तथा गंगा के इस ओर के उपक्षेत्र में अपना प्रभुत्व कायम किया। अलीगढ़, बुलंदशहर और दिल्ली में मुगलों के प्रभाव को कम करते हुए सिक्खी आन-शान एवं गौरव को कायम किया। सरदार बघेल सिंघ ने मुगलों के प्रभाव को कम करने हेतु १७८५ को मरहटों के साथ संधि की।

सरदार बघेल सिंघ की सर्वाधिक उल्लेखनीय प्राप्ति दिल्ली में स्थित गुरु-स्थानों की निशानदेही और उनका निर्माण है। सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में खालसा दल ८ मार्च, १७८३ को दिल्ली पहुंचा। स. बघेल सिंघ के जत्थे ने दिल्ली शहर के भीतर प्रवेश पाने के लिए तीस हजारी द्वार से आक्रमण किया। दोनों सिक्ख सरदारों का साथ देने के लिए सरदार जस्सा सिंघ रामगढ़िया भी अपने खालसा दल के साथ पहुंच गए। समूह खालसा दलों द्वारा दिल्ली के लाल किले पर कब्जा जमा लिया गया। इसके दीवाने-आम में एक एकत्रता आयोजित करके स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया को दिल्ली के तख्त पर बिठाया गया और उनको "सुलतान-उल-कौम" की उपाधि से निवाजा गया। अत्याचारी मुगल शासकों को उनकी राजधानी में पराजित करके गुरु के खालसा पंथ ने एक इतिहास का सृजन किया जिस पर सिक्ख पंथ गर्व महसूस करने का अधिकार रखता है। गुरु के खालसे के सामने अभी केवल राजनैतिक सत्ता की स्थापना के अतिरिक्त अधिक महत्व वाले कई उद्देश्य थे जिनको सामने रखकर सिक्ख सरदारों ने तत्कालीन मुगल शासन-प्रशासन के साथ एक संधि करनी उचित समझी।

इसी संधि के अधीन सरदार बघेल सिंघ को दिल्ली में स्थित ऐतिहासिक पावन स्थानों को मूर्तिमान करने का मिशन दिया गया। सरदार बघेल सिंघ ने दिल्ली में निवास रखते हुए ऊंची लगन, क्षमता, योग्यता, सूझ-बूझ, लियाकत के साथ इस पवित्र पंथक कार्य को संपूर्ण करके समूचे सिक्ख पंथ का अत्यंत सच्चा प्यार-सत्कार प्राप्त किया। गुरुद्वारा माता सुंदरी जी, गुरुद्वारा बंगला साहिब, गुरुद्वारा शीशगंज साहिब और गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब का निर्माण-कार्य इसी मिशन में शामिल है। सरदार साहिब सिक्ख पंथ में अपने जीवन-काल में इतने सम्माननीय हो गए कि पंथ के ऊंचे कहलवाने वाले परिवार आप जी की शमूलीयत वाले पांच प्यारों से अमृत-पान करना विशेष पुन्य कर्म मानते थे। विशेष परिस्थितियों में आपको पटियाला रियासत पर धावा बोलना पड़ा। आपके दल ने पटियाला नरेश की सेनाओं को पराजित किया। जब महाराजा अमर सिंघ ने अपने वकील स. चैन सिंघ को भीतर डाल कर जत्थेदार बघेल सिंघ के साथ संधि की तो महाराजा ने अपने बड़े पुत्र साहिब सिंघ को इनके हाथों, विशेष याचना करके अमृत-पान कराया। इससे जत्थेदार बघेल सिंघ के ऊंचे व निर्मल धार्मिक व्यक्तित्व की एक वास्तविक झलकी देखी जा सकती है। सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में दिल्ली पर सिक्खों का अधिकार जहां तत्कालीन अत्याचारी मुगल शासन के विरुद्ध सिक्ख कारगुजारी रूपी एक गौरवशाली घटनाक्रम है वहां अत्यंत महत्वपूर्ण पावन ऐतिहासिक स्थानों के निर्माण के रूप में इसकी महान मिशन के रूप में सम्पूर्णता अत्यंत खुशी का एक ऐतिहासिक मुकाम है। आओ! इस अद्वितीय सेवा के बदले आज हम सरदार बघेल सिंघ को हृदय की गहराइयों से स्मरण करें।



इसु गुफा महि अखुट भंडारा

-डॉ. सत्येन्द्र पाल सिंघ*

धर्म आदि काल से मनुष्य के जीवन का हिस्सा है और सदैव ही रहस्यात्मकता इससे जुड़ी रही है। किसी ने परमात्मा के सगुण स्वरूप को देखा है तो कोई निर्गुण स्वरूप पर विश्वास करता आया है। परमात्मा को पाने के कितने ही मार्ग और विधियां हैं और कितनी ही सहायक शक्तियों की कल्पना की गयी है। समय-समय पर इन विचारों से भ्रान्तियां और अंधविश्वास जुड़ते रहे हैं, जिससे धर्म जटिल से जटिलतर होता गया और उसमें विकृतियां आती गयीं। इन विकृतियों के भंवर में फंस कर मनुष्य ने स्वयं को विवश महसूस किया। सिख गुरु साहिबान ने मनुष्य की इस विवशता को समझ कर उसे सच्चा मार्ग दिखाने का प्रयास किया। सिख गुरु साहिबान अपने प्रयासों में इसलिये सफल रहे और इंसानियत का पथ-प्रदर्शन कर सके क्योंकि उन्होंने दिगभ्रमित मनुष्य की विवशता को अति निकटता से जाना। इन संदर्भों में तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का जीवन भी हमारे लिये रौशन मीनार की तरह है और श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित उनकी बाणी भी। श्री गुरु अमरदास जी ने अपने जीवन के साठ वर्ष आत्मिक शांति की तलाश में बिताये थे। धर्म के नाम पर वे जिस पथ के पथिक थे उससे उन्हें अपनी मंजिल मिलती नजर नहीं आती थी, जिससे मन में उद्विग्नता थी। सच्चे मार्ग की प्रेरणा अपने छोटे भाई की बहू बीबी अमरो जी के माध्यम से उन्हें प्राप्त हुई और वे सिखी धारण करने की लालसा लेकर जब श्री गुरु अंगद देव जी के दरबार में पहुंचे तो उनकी आयु ६१ वर्ष की थी और श्री गुरु अंगद देव जी की आयु ३६ वर्ष की थी। परमात्मा ने उन पर कृपा की और उनके भटकाव को समाप्त करके श्री गुरु अंगद देव जी के चरणों में जा बिठाया। साथ ही उनके अंतर को ऐसा प्रकाशित किया कि वे श्री गुरु अंगद देव जी के बाद गुरगद्दी के हकदार बने और श्री गुरु नानक देव जी के मिशन को आगे बढ़ाया :

गुरमती हरि मंनि वसाइआ ॥
हरखु सोगु सभु मोहु गवाइआ ॥
इकसु सिउ लिव लागी सद ही हरि नामु मंनि वसावणिआ ॥ (पन्ना १२२)

जैसी कृपा परमात्मा ने श्री गुरु अमरदास जी पर की वैसी कृपा मनुष्य के जीवन में तभी संभव है जब वह भ्रान्तियों और अंधविश्वासों को तोड़ कर परमात्मा के नाम को मन में धारण करे और सभी संवेगों-आवेगों से स्वयं को मुक्त करके सहज अवस्था प्राप्त करे। सहज अवस्था प्राप्त करने के लिये भी किसी विशेष उद्यम की बात गुरबाणी नहीं करती है। इसका भी आसान-सा रास्ता है :

अनद मंगल कलिआण निधाना ॥
सूख सहज हरि नामु वखाना ॥
होइ क्रिपालु सुआमी अपना नाउ नानक घर महि आइआ जीउ ॥ (पन्ना १०४)

परमात्मा का नाम जपने, उसका स्मरण करने मात्र से ही सहज अवस्था का सुख प्राप्त

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ-२२६०१७*

हो जाता है। मनुष्य परमात्मा की कृपा पाने की अभिलाषा मन में करे, परमात्मा को पाने की याचना करे और उसे सदैव अपने घर अर्थात् मन में स्थान दे, सदैव उसे अपनी चेतना में रखे। जिसके मन में परमात्मा का निवास है उसकी तो शोभा ही न्यारी है :

गोविंदु ऊजलु ऊजल हंसा ॥
मनु बाणी निरमल मेरी मनसा ॥
मनि ऊजल सदा मुख सोहहि अति ऊजल नामु धिआवणिआ ॥ (पन्ना १२१)

मन में परमात्मा हो तो सोच स्वयं ही निर्मल हो जाती है और अंतर के प्रकाश में मनुष्य पूर्णत: प्रकाशमान हो उठता है। गुरबाणी आत्मिक शांति पाने और परमात्मा से जुड़ने के जप, तप, यज्ञ, त्याग, सन्यास, हठ जैसे तमाम प्रयासों से मनुष्य को मोड़ते हुए उसके सारे कर्मकांडों को विराम देती है और बताती है कि जो पाने के लिये वह यहां-वहां भटकता फिर रहा है वह तो उसके भीतर ही है :

घर ही सउदा पाईऐ अंतरि सभ वथु होइ ॥
खिनु खिनु नामु समालीऐ गुरमुखि पावै कोइ ॥ (पन्ना २९)

जिसकी कामना है वह मन में फिर भी दिख नहीं रहा है, क्योंकि मन में तो विकार भरे हुए हैं। जब तक ये विकार हैं तब तक तो दुख ही दुख है :

मनि मैलै भगति न होवई नामु न पाइआ जाइ ॥
मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाइ ॥ (पन्ना ३९)

जो सच के मार्ग पर नहीं चलते उनकी दुर्दशा ही होती है। उपरोक्त वचनों में साफ संदेश मिलता है कि मन निर्मल है तो परमात्मा सहज ही प्राप्त हो जाता है और मन निर्मल नहीं है, उसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे विकार पनप रहे हैं तो कितना भी परमात्मा का स्मरण कर लें उसका कोई फल नहीं प्राप्त हो सकेगा। निर्मलता सोच में और आचरण में भी होनी चाहिये। श्री गुरु अमरदास जी इस बात को भली-भांति जानते थे इसीलिये उन्होंने यह नियम बनाया कि जो भी व्यक्ति उनके दर्शन करने, उपदेश सुनने आयेगा पहले उसे पंगत में सबके साथ बैठकर लंगर छकना होगा। गुरु के लंगर में हर वर्ग, हर जाति के श्रद्धालु एक साथ बैठकर एक-सा ही लंगर छकते थे, जिससे मन में समानता की भावना दृढ़ होती थी। मुगल सम्राट अकबर भी जब श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन करने आया तो पहले उसने लंगर छका तभी उसे गुरु साहिब ने दर्शन दिये। इस तरह एक नियम सभी पर समान रूप से लागू करने की परम्परा आरंभ हुई। मन की निर्मलता, सहजता दिखनी चाहिये ऐसा विश्वास सभी सिख गुरु साहिबान का था। मनुष्य का आचरण भी परमात्मा के अनुसार होना चाहिये :

करणी कार धुरहु फुरमाई ॥
बिनु सबदै को थाइ न पाई ॥
करणी कीरति नामु वसाई ॥
आपे देवै ढिल न पाई ॥ (पन्ना ३६३)

मनुष्य को इस संसार में परमात्मा के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करना है और इसी में उसका भला है, हित है। मनुष्य भटक रहा है। उसे अपने लक्ष्य का ज्ञान ही नहीं है, इसीलिये उसका जीवन व्यर्थ जा रहा है। परमात्मा के नाम से जुड़ कर ही उसे अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान हो सकता है। परमात्मा के नाम की महिमा अपार है :

इहु धनु अखुटु न निखुटै न जाइ ॥
पूरै सतिगुरि दीआ दिखाइ ॥
अपुने सतिगुर कउ सद बलि जाई ॥
गुर किरपा ते हरि मंनि वसाई ॥ (पन्ना ६६३)

परमात्मा का नाम-रूपी धन न तो कम होता है और न इसका नाश होता है, किन्तु इसके सहेजने का स्थान मनुष्य का मन ही है, अन्यत्र कहीं यह नहीं रखा जा सकता। जिसने इस बात को समझ लिया उससे अधिक धनवान कोई और इस संसार में नहीं है। मन परमात्मा रूपी धन को सहेजने का सबसे सुरक्षित स्थान है, इसलिये इसे गुफा की संज्ञा भी दी गयी है:

इसु गुफा महि अखुट भंडारा ॥
तिसु विचि वसै हरि अलख अपारा ॥
आपे गुपतु परगटु है आपे गुर सबदी आपु वंञावणिआ ॥ (पन्ना १२४)

अपार शक्तियों के स्वामी परमात्मा का नाम मन में ही समा सकता है। दूसरी ओर मन भी ऐसा है कि शीघ्र वश में आने वाला नहीं है। मन वश में आने से ही सारे भटकाव समाप्त होंगे और दुख दूर होंगे। मन को वश में वही कर सकता है जो जानता है कि यह परमात्मा के नाम से ही सम्भव है :

मनु मरै धातु मरि जाइ ॥
बिनु मन मूए कैसे हरि पाइ ॥
इहु मनु मरै दारू जाणै कोइ ॥
मनु सबदि मरै बूझै जनु सोइ ॥ (पन्ना ६६५)

मन को वश में करने की विधि कोई-कोई ही जानता है। संसार में बहुत-से लोग ज्ञान की बातें कर रहे हैं और अंदर से खोखले हैं :

जगु कऊआ मुखि चुंच गिआनु ॥
अंतरि लोभु झूठु अभिमानु ॥
बिनु नावै पाजु लहगु निदानि ॥ (पन्ना ८३२)

श्री गुरु अमरदास जी सामाजिक बुराइयों से विदित थे इसीलिये वे जाति-प्रथा, छुआ-छूत और सती-प्रथा के सवाल पर खुल कर विरोध में खड़े हुए और उन्होंने मन व कर्म के बीच सामंजस्य की बात कही। उन्होंने स्त्रियों के सम्मान की बात की और मृत्यु उपरांत किये जाने वाले तमाम निरर्थक संस्कारों का भी विरोध किया। ऐसे कर्मों में न तो मनुष्य का हित है न समाज का। ये मन को निर्मल नहीं करते वरन् उद्विग्न करते हैं। मनुष्य दुख भोगता है। इन दुखों का अंत परमात्मा से जुड़ने में है :

साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ (पन्ना ९१७)

कविता

जगतु जलंदा . . .

हिमालय की आंखें नम हैं।
गंगा भी अब मरूस्थल है।
आज संस्कृति में छल है,
क्योंकि सभ्यता खंभों में हमचल है।
नदियों का ये सूनापन
न सुनाई देती झरनों की कलकल
अब उजाले में चलो जरा संभलकर,
क्योंकि यहां संबंधों की दलदल है।

चारों तरफ ईर्ष्याग्नि की लपटें हैं
जिसमें झुलस रही है यह दुनिया।
आओ गुरु की पावन बाणी गाएं :
"जगतु जलंदा रखि लै
आपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै
तितै लैहु उबारि ॥"



-बीबा जसप्रीत कौर 'जस्सी', ८३, बसंत विहार, डुगरी, लुधियाना। मो: ०९५०१४३२८६९

होला महल्ला

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

भारत में होली का त्योहार प्राचीन काल से ही मनाया जाता है। इस त्योहार की मिथिक कथा भक्त प्रहलाद के पिता हृणयकशप की बहन होलिका के साथ जोड़ी जाती है। परपंरा के अनुसार होलिका और हृणयकशप बुराई का चिन्ह हैं और भक्त प्रहलाद नेकी का। नेकी की बदी पर जीत दिखाने हेतु, बुराई को नफरत करने के लिए, अज्ञानी लोगों द्वारा एक दूसरे पर रंग के स्थान पर गंद-मंद फेंक कर अथवा निम्न हरकतों से होली का त्योहार मनाया जाना मान लिया गया है। बुराई को घृणा करने की जगह लोग खुद बुराई का रूप धारण कर जाते हैं।

वैसाखी के त्योहार का स्वरूप श्री गुरु अमरदास जी से और दीवाली के परंपरागत त्योहार का स्वरूप श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के समय बदला गया। "होली" के त्योहार को दशम पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने "होला" के रूप में परिवर्तित कर दिया। गुरु जी ने इसका नाम "होला महल्ला" रखा। गुरु जी ने होली का स्वरूप स्त्रीलिंग से पुलिंग में परिवर्तत करके इसमें बलवानगी का रस भर दिया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने १५ दिन अनंदपुर साहिब में शस्त्र-विद्या, वीर-रसी वारें, घुड़सवारी, कुश्तियां जैसे शारीरिक जंगी अभ्यास करवा कर होले महल्ले का प्रारंभ किया। अंतिम दिन शस्त्रधारी सिक्खों के दो विरोधी ग्रुप बना कर, उनसे नकली जंग करवाई जाती थी। "महल्ला" का अर्थ है--धावा बोलना, हमला करना आदि। गुरु जी ने इन दोनों ग्रुपों को किला होलगढ़ पर कब्जा करने को कहा। दोनों में से जिस शस्त्रधारी ग्रुप ने दूसरे को हरा कर, होलगढ़ पर कब्जा कर लिया, उसको विजेता करार देकर पहला पुरस्कार दिया। गुरु जी ने "होला मोहल्ला" त्योहार द्वारा खालसा फौज में वीर रस भर कर अकाल पुरख की फौज (खालसा पंथ) को तैयार किया। इस प्रकार गुरु जी ने पुरानी घिसी-पिटी रीति को बदल कर एक क्रांतिकारी जागृति का आगाज किया।

संसार में धर्मी अथवा संत वृत्ति के लोगों की रक्षा और दुर्बल, गरीब, असहायों का सहारा बनने हेतु जुझारू वृत्ति का होना अनिवार्य है। समूह शस्त्र जुझारू स्वभाव का जरूरी अंग हैं। इसी लिए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने हरेक सिक्ख के लिए शस्त्रधारी होना जरूरी करार दिया। आत्म-रक्षा के लिए भी शस्त्रधारी होना जरूरी है। अत: खड़गधारी दशमेश पिता जी समूह शस्त्रों को प्रणाम करते हैं।

जिते ससत्र नामं ॥
नमसकार तामं ॥ . . . ९१॥१॥ (बचित्र नाटक)

होला महल्ला के अंतिम दिन श्री अनंदपुर साहिब में और देश-विदेश में कई स्थानों पर महल्ला नगर-कीर्तन के रूप में निकाला जाता है। यह परंपरा प्रारंभिक काल से गुरु जी की लाडली फौज "निहंग सिंघों" ने अपनाई हुई है।

बसंत ऋतु में प्रकृति में निखार आ जाता

**पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय खोज केन्द्र, गुरदासपुर (पंजाब)-१४३५२१*

है। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल भांति-भांति की सुगंधि बिखेरते हैं। ऐसे शुद्ध वातावरण में सूखा मन हरा-भरा अनुभव करता है। परमेश्वर के प्यारे संत-जन, जो प्रभु के रंग में रंगे हुए सदीवी आनंद में रहते हैं, उनको प्रभु-रंग का लाल रंग लगा रहता है। अत: संत-सेवा अथवा नाम-सिमरन करने वाले प्रभु के भक्त-जनों की सदा ही बसंत ऋतु अथवा सदीवी होली बनी रहती है। संसारी लोगों की होली और संत-भक्तों की होली में ढेर सारा अंतर है। एक बाहरी अनंद का प्रतीक है और दूसरी प्रभु-नाम की मस्ती के गूढ़े रंग का नजारा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संत-जनों की होली इस प्रकार बयान की गई है :

होली कीनी संत सेव ॥
रंगु लागा अति लाल देव ॥ (पन्ना ११८०)

संक्षिप्त में कहा जा सकता है कि गुरु साहिब ने होली को नया रंग देकर, इसके परंपरागत रूप का रूपांतरण करके इसको नए अर्थ प्रदान किये और इसका नाम 'होली' से 'होला' कर दिया। इसके स्वरूप और प्रकृति में जुझारू रंग भरकर, इसको "महल्ला" की संज्ञा प्रदान की। इस प्रकार यह पवित्र त्योहार "होला महल्ला" के नाम से प्रसिद्ध हुआ। पंडित निहाल सिंघ लाहौरी के शब्दों में इसको ऐसे कहा गया है :

औरन की आरती, सु आरता अकाल जु को,
लोगन की बोली, दीन बंध को बोला है।
अंबिका कड़ाही, महाराज को कड़ाह सुधा,
चोली को बखाने बाल, सुआमी जी को चोला है।
झंडी और सवारी आप, झंडा जू सवारा नाथ,
झोली तो तमाम की, सु खालसे को झोला है।
देवी देव सिधन की लोक में प्रसिध होली,
श्री गुरु गोबिंद सिंघ, जु को आज होला है।
(सिक्खी प्रभाकर-१५)
ऊजल निहाल सिंघ होवे सतिसंग करे,
ब्रहम पद पावै या मैं रंच हू न रोला है।
नाम धन खट्टो पुन्ज पापन को कट्टो रटो,
श्री गुरु गोबिंद सिंघ, धंन तोरो होला है।
(संत निहाल सिंघ, बुंगा सोहलां-९)



बुजुर्गों का आदर करना 'अनुभव' का आदर करना है।

'गुरमति ज्ञान' का 'बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक' प्राप्त हुआ। बुजुर्ग वर्ग पर इस प्रकार इतनी आत्मीयता से चिंतन-मनन करने का विचार बहुत अद्भुत रहा। हमारे समाज में बुजुर्गों की जो हालत है वह बहुत शोचनीय और चिंताजनक है। हम उन्हें वह सम्मान नहीं देते जिसके वे हकदार हैं। वास्तव में बुजुर्गों का आदर करना 'अनुभव' का आदर करना है। जिंदगी की किताब के जितने पन्ने उन्होंने पढ़े हैं, उतने हमने नहीं पढ़े। हमें नहीं पता होता कि आगे आने वाले पन्नों में क्या है। आपने बुजुर्गों को चिंतन का केंद्र बनाकर बहुत से भूले-भटके मनुष्यों को दिशा दी है कि वे बुजुर्गों के प्रति अपना नजरिया बदलें। इस सब के लिए 'गुरमति ज्ञान' का संपादन-परिवार बधाई का हकदार है।

-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल, मंडी मुल्लांपुर दाखा, लुधियाना।

कविता

कन्या-भ्रूण हत्या

-श्री सुरजीत दुखी*

श्री अकाल तख्त से जारी हुक्मनामे को अपनाओ!
कन्या को न कोख में मारो, गुरमति ज्ञान को पाओ!
कन्या मारने वाले सिक्ख से, सभी सम्बंध विच्छेद करो,
लड़कियों के गिरते अनुपात को ऊपर पुनः उठाओ!
"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥"
गुरु नानक की पावन बाणी का, है यह फरमान।
राजा, रंक, बहादुर, योद्धा, सारे मां के बेटे,
करोगे खत्म जो मां को ही तुम, तो होगा न कल्याण।
मां, बहन, बेटी, मामी, चाची और भाभी।
अन्य अनेकों रिश्तों की, उत्पत्ति की यह चाबी।
होंगी न जब लड़कियां ही तो, न होगी कोई शादी।
अच्छी परंपराओं की, हो जायेगी बरबादी।
कन्या-भ्रूण हत्या के भयंकर परिणाम होंगे।
चंगे-भले जीवन, चलते-चलते नाकाम होंगे।
ईश्वर की सृष्टि में ऐसा, असंतुलन आ जाएगा।
तब हर शख्स खुद को, बेबस बताएगा।
इसीलिए मैं आपको, चेतावनी देना चाहता हूं।
कन्या-भ्रूण हत्या के प्रति, जागृत करना चाहता हूं।
घर में ही न करो, खुद घर को बरबाद।
लड़के-लड़कियों के अनुपात का, कुछ तो रखो हिसाब।
डॉक्टरो, नर्सो, पुलिस वालो, एड्वोकेटो!
अपनी होश को अब खुद ही समेटो।
संकल्प लो कि हम कन्या-भ्रूण हत्या के जिम्मेवार नहीं होंगे,
इसे करने वालों के मददगार भी नहीं होंगे।
अन्यथा भूकम्प और सुनामी जैसी,
प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा।
अथाह गर्मी, सर्दी, वर्षा और सूखे से,
इसी तरह जूझना पड़ेगा।
संस्कृति, सभ्यता और सामाजिक न्याय की हत्या हो जाएगी।
यह असंतुलन की निसबत, जिन्दगी को जिन्दगी से छीन ले जायेगी।
आज मैंने आपको नहीं कुछ और, यही बताना है।
हमने कन्या-भ्रूण हत्या न करने का संकल्प दोहराना है।
खुद सीखो और दूसरों को सिखाओ!
कन्या-भ्रूण हत्या के जघन्य पाप से बाज आओ!
आओ! नारी को जन्म लेने दें,
लालन-पालन कर जीने का अधिकार दें,
'दुखी' बिन पूजा ही हर बरकत, घर अपने ले आओ।



*३३२/९, गली जट्टां, अंदरून लाहौरी गेट, श्री अमृतसर।

कन्या भ्रूण-हत्या : एक सामाजिक अभिषाप

*-डॉ. मनजीत कौर**

पुरुष और नारी जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं। जीवन में चहुंमुखी विकास हेतु दोनों का ही समान महत्व है, लेकिन इसमें नारी रूपी गाड़ी-पहिये को हमेशा ही शारीरिक तथा मानसिक रूप से कमजोर ही माना गया। नारी की स्थिति हर युग में दयनीय रही है। मध्य युग में भी नारी को हेय दृष्टि से देखा जाता था। आखिर क्यों? डॉ. रमेश चन्द्र मिश्रा ने मध्ययुगीन नारी की स्थिति का सटीक चित्रण किया है। वे लिखते हैं कि भारतीय समाज प्राचीन काल से पितृसत्तात्मक माना गया है, क्योंकि यहां नारी की अपेक्षा, पुरुष का अधिक सम्मान एवं निर्णायक स्थिति रही है। स्त्री के कार्यों की धुरी पति की अनुकूलता पर निर्भर बनी रहकर ही घूमती थी। कुछ ग्रंथों में मध्ययुगीन नारी का जो समवेत बिंब बनता है वह कुल मिलाकर हीन, भावनाग्रस्त, सुंदरी, कामनी, व्यभिचारिणी, घर की चारदीवारी में बंद अशिक्षित नारी का ही बनता है। *(संत-साहित्य और समाज, पृष्ठ ३३८)*

आधुनिक समझे जाने वाले पश्चिमी विद्वान भी औरत को पुरुष के बराबर दर्जा नहीं दे सके। अरस्तू पुरुष को सुपीरियर तथा स्त्री को इन्फीरियर मानते हैं। जे. गोथ कहते हैं कि 'नारी में नूर ही नहीं होता'। शेक्सपीयर की मान्यता है कि 'कमजोरी का नाम स्त्री है'। मनु ने फैसला सुनाया कि 'स्त्री अज्ञान एवं झूठ की मूर्त है'। कुछ धर्म-पुस्तकों में नारी को माया, सर्पनी, डाकिनी तक सम्बोधित किया गया है। गोस्वामी तुलसीदास ने तो स्त्री का दर्जा पशु और गवार से ऊंचा नहीं माना, यथा :

ढोर गवार शूद्र अरु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी।

अगर हम बात करें वर्तमान की तो जहां आज मानव ने वैज्ञानिक खोजों द्वारा इतनी उन्नति की है कि सारी प्रकृति पर अपना अधिकार-सा जमा लिया है वहीं अपने लिए अनेक समस्याओं को भी निमन्त्रण दिया है। 'कन्या भ्रूण-हत्या' से तो मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। भारत जैसा महान मानवीय मूल्यों वाला सभ्य देश भी इस पाप-कर्म से अछूता नहीं है। हमारे देश में 'पुत्र मोह' हर युग, हर धर्म में रहा है।

देश में दूर-दराज कबीलों में कन्या को जन्म लेते ही मार देने की बात कभी-कभार सुनने को मिलती थी, लेकिन आज अल्ट्रासाउंड तकनीक के प्रचलन से जन्म से पहले लिंग की जानकारी से कन्याओं को मौत के घाट उतारना और भी सरल हो गया है। अब तो जन्म के प्राकृतिक अधिकार से ही कन्याओं को वंचित कर दिया गया है। जो वर्तमान में आंकड़े बोलते हैं उससे स्पष्ट है कि प्राकृतिक अनुपात को बिगाड़ कर मनुष्य अपने पांव पर स्वयं कुल्हाड़ी मार रहा है। महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार देने की बात करने वाले समाज के लिए यह शर्मनाक है।

वस्तुतः कन्या भ्रूण-हत्या एक ऐसा अभिषाप

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर। मो: ०९३१४६-०९२९३**

है जो मानव द्वारा किया गया महापाप है। इस सन्दर्भ में पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी की पावन पंक्ति स्मरण हो आती है :

करतूति पसू की मानस जाति ॥
लोक पचारा करै दिनु राति ॥ (पन्ना २६७)

अर्थात् इंसान की करनी पशुओं वाली तथा कहलवाता वह मनुष्य है, यह कैसी विडंबना है! यह कुकर्म सभ्य कहलवाने वाला इंसान कर रहा है। लगभग ४०० वर्ष पूर्व उस समय के अनुसार मनुष्य की करनी को पशुओं की तरह देखा और फिर उन्हें सुचेत भी किया। वर्तमान संदर्भ में अगर हम इस पावन पंक्ति पर विचार करें तो यह हमारे लिए कितने शर्म की बात है कि कन्या भ्रूण-हत्या जैसा पाप-कर्म तो पशु भी नहीं करता, यह तो अपने आप को सुसभ्य, आधुनिक, श्रेष्ठ बुद्धि का समझने वाला इंसान कर रहा है। गुरबाणी चिंतनानुसार पुरुष केवल एक "अकाल पुरख" है, बाकी समस्त जीवात्माएं स्त्री-रूप ही हैं, तब यह भेद कैसा?

आज एक ओर जहां महिलाएं कमर्शियल पायलेट बनकर हवाई जहाज उड़ा रही हैं, वहीं दूसरी ओर न जाने कितनी बेटियों को आधुनिक यंत्रों द्वारा गर्भ में ही कत्ल कर दिया जाता है। अपनी प्रतिभा से देश को गौरवान्वित करने वाली बेटियों को अगर उनकी माताएं भी गर्भ में ही मरवा देतीं तो भला देश को गौरवान्वित कौन करता? सर्वविदित है कि लड़कियों ने हर क्षेत्र में बाजी मारी है, फिर भी समाज में हमेशा दूसरे दर्जे में ही आती हैं और यही कारण है कि कन्या भ्रूण-हत्या जैसे कुकृत्य समाज में खुलेआम हो रहे हैं। विचारणीय पहलू यह है कि हर समस्या के पीछे कोई कारण होता है। आओ! हम भी इस विकट समस्या के पीछे छिपे विशेष कारणों को जानने का यत्न करें ताकि समय रहते इसका निदान हो सके। इस समस्या के प्रमुख कारण निम्नलिखित हो सकते हैं :

१. कन्या भ्रूण-हत्या का प्रमुख कारण है 'पुत्र मोह'। लोग लड़के को 'कुल दीपक' तथा लड़की को 'मुसीबत' समझते हैं।

२. कुछ लोगों की संकीर्ण सोच इस प्रकार होती है कि वे सोचते हैं कि कन्या भ्रूण-हत्या करवा कर हमने उन बच्चियों को गरीबी तथा जिल्लत भरी जिंदगी से बचा कर मानो बहुत बड़ा उपकार किया है।

३. कन्या भ्रूण-हत्या का प्रमुख कारण 'दहेज-प्रथा' भी हो सकता है।

४. कुछ लोग तो लड़की के जन्म का अभिप्राय घर से लक्ष्मी का प्रस्थान मानते हैं। अत: जन्म से पूर्व ही उसे मौत के घाट उतार देते हैं।

कारण चाहे जो भी हो परिणाम पूर्णतया गलत ही है, क्योंकि बच्चे ही तो देश का भविष्य होते हैं। जब वर्तमान ही नहीं होगा तो भविष्य क्या खाक होगा? अत: जब भविष्य को ही मां के गर्भ में खत्म कर दिया जाएगा तो देश का क्या होगा? हालांकि भारत सरकार द्वारा सन् १९९१ में अधिनियम बनाया गया तथा १९९६ में लागू भी कर दिया गया, फिर भी अल्ट्रासाउंड द्वारा कन्या भ्रूण-हत्या में कोई कमी नहीं आई। केवल कानून बना देने से ही सब कुछ नहीं होने वाला, जरूरत है उसको पूर्णत: एवं कठोरता से व्यवहार में लाने की, अपनी सोच को बदलने की, क्योंकि अगर इसी अनुपात में कन्या भ्रूण-हत्याएं होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब लड़की को दुर्लभ प्राणी घोषित कर दिया जाएगा। जब बेटी ही नहीं होगी तो बहू कहां से आएगी? और जब बहू नहीं तो मां

कौन बनेगी? अगर मां ही नहीं तो न बेटा होगा न बेटी! इस तरह तो मानव-समाज का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

अत: आवश्यकता है अजन्मी बेटी की पुकार सुनने की, जब वह जन्म लेने से पूर्व अपने मधुर अहसासों से मां को अवगत करवाती है। मानो वह कह रही हो, "मां! तू मुझे दुनिया में तो आने दे। तू किसी से भी मत डर, तू मुझे बोझ भी मत समझ।" जब कोई मां अपनी बेटी की यह पुकार सुन लेती है और उसे जन्म देने का जो परोपकार करती है तो बेटी अपनी कृतज्ञता जताते हुए मानो कह उठती है :

तूने मुझको जन्म दिया है, पाल-पोस कर बड़ा किया है।
रातों जाग, गीले में सोकर, बड़ा मुझ पर उपकार किया है।
जब तक जीऊंगी मां, मैं तेरा गुण न भुलाऊंगी।
बोझ न समझ मुझे हे मां, मैं तेरा मान बढ़ाऊंगी।

आज से लगभग ५२५ वर्ष पूर्व गुरु नानक साहिब जी ने एक गूढ़ रहस्य प्रस्तुत किया। गुरदेव के चिन्तनानुसार एक ईश्वर को छोड़कर सम्पूर्ण संसार की जननी स्त्री ही है तथा पुरुष रूप में केवल परमेश्वर ही है और समस्त जीवात्माएं चाहे वे पुरुष-रूप हैं, चाहे स्त्री-रूप में, वे स्त्री ही हैं।

अत: नारी के हक में पहले पहल गुरु नानक साहिब जी ने ही नारा लगाया, यथा :

सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
(पन्ना ४७३)

अर्थात् पीर-पैगंबरों, ऋषियों-मुनियों, राजाओं-महाराजाओं की जननी कैसे निम्न अर्थात् नीच हो सकती है? यही नहीं, गुरबाणी आशयानुसार ईश्वर ने चींटी से हाथी तक की रचना एक ही मिट्टी से की है। हम मूढ़ प्राणी स्त्री-पुरुष में अंतर समझ किन पाप-कर्मों में लगे हैं! भक्त नामदेव जी की बाणी इस सन्दर्भ में हमारा मार्गदर्शन करती है, यथा :

सभै घट रामु बोलै रामा बोलै ॥
राम बिना को बोलै रे ॥१॥रहाउ॥
एकल माटी कुंजर चीटी भाजन हैं बहु नाना रे ॥
असथावर जंगम कीट पतंगम घटि घटि रामु समाना रे ॥ (पन्ना ९८८)

वर्तमान में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी अत्यधिक प्रासंगिक है। आज कोई भी धर्म, कोई भी समाज इस अभिशाप से अछूता नहीं है। हमें गुरबाणी आशयानुसार अपनी सोच को बदलना होगा अन्यथा कन्या भ्रूण-हत्या जैसा घृणित कोढ़, अमानवीय कृत्य एक दिन समूची मानव जाति के अस्तित्व पर ही प्रश्न चिन्ह लगा देगा।





मन को शांति प्राप्त होती है

हमें 'गुरमति ज्ञान' नियमित रूप से प्राप्त हो रहा है। खालसा पंथ के बारे में नवीनतम जानकारियां प्राप्त हो रही हैं। पढ़ कर मन को शांति प्राप्त होती है।

-जिनेन्दु कुमार
अहमदाबाद।

विश्व महिला दिवस और भारत

*-श्रीमती शैल वर्मा**

आठ मार्च को विश्व महिला दिवस आता है। महिलाओं के हित को ध्यान में रखकर कुछ कानूनों-नियमों को आठ मार्च से लागू किया गया था। आदि काल से ही सम्पूर्ण विश्व में स्त्री पुरुष का अभिन्न अंग रही है। चाहे विश्व की कोई भी सभ्यता या समाज रहा हो, आधुनिक दुनिया का कोई भी सभ्य देश, आज नारी के अधिकारों के प्रश्नों की उपेक्षा नहीं कर सकता। नारी-पुरुष की सत्ता समान रूप से स्वीकार करनी पड़ेगी। पिछली एक शताब्दी के अंतराल में हमारी दुनिया अपने समस्त अवयवों के साथ जिस तेजी से बदली है और विकसित हुई है उसके बाद हम यह कह सकते हैं कि बहुत-सी स्थितियों के साथ स्त्री की स्थिति भी बदली है। न केवल अमेरिका एवं यूरोप में बल्कि दक्षिण एशिया, चीन एवं मध्य एशिया समेत तीसरी दुनिया के लगभग सभी देशों में रहने वाली महिलाओं के जीवन-स्तर में भी अंतर आया है। नयी अर्थ-नीति और आर्थिक सुधारों के नेतृत्व में स्त्रियां चौतरफा प्रगति-पथ पर बढ़ रही हैं। पहले से कहीं अधिक लड़कियां शिक्षा ग्रहण करने स्कूल जा रही हैं। सरकारी स्तर पर ऐसे कानून बनाये जा रहे हैं जिनसे महिलायें कार्य-स्थलों एवं घरों में अपने को सुरक्षित अनुभव कर रही हैं।

१९९५ में हुये विश्व महिला सम्मेलन, जो बीजिंग में हुया, में भारत सरकार ने वादा किया था कि महिलाओं पर होने वाले अत्याचार को रोका जायेगा। महिलाओं के प्रति भेदभाव को मिटाने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय मसौदे को भारत सरकार ने स्वीकार किया और इस पर हस्ताक्षर कर यह प्रतिबद्धता जाहिर की कि स्त्री-समाज पर हो रही हर तरह की हिंसा को रोका जायेगा। वर्ष २००१ को महिला सशक्तिकरण वर्ष घोषित करना इसी प्रकार के प्रयासों की कड़ी थी। महिलाओं के लिये २००१ महत्वपूर्ण वर्ष बन गया।

महिलाओं पर हिंसा रोकने के लिए कई कानूनों में बदलाव भी किये गये। घरेलू हिंसा हेतु भारतीय दंड संहिता में ४९८ एवं ३०४ जैसी महत्वपूर्ण धाराएं जोड़ी गयीं। घरेलू हिंसा कानून जो कि अक्तूबर २००६ से प्रभाव में आया है, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा रोकने के संदर्भ में महत्वपूर्ण कदम कहा जा सकता है। यह कानून महिलाओं के प्रति की गयी मौखिक, शारीरिक, यौनिक, भावनात्मक एवं आर्थिक प्रताड़ना के लिये दंड की व्यवस्था करता है, जो एक वर्ष का कारावास या आर्थिक दंड दोनों हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ नई संस्थायें जैसे 'पारिवारिक अदालतें', 'महिला थाने', 'महिला आयोग', जिला स्तर की 'महिला सहायता समितियां', 'परिवार परामर्श केन्द्र' तथा 'अल्पावास गृह' आदि भी अस्तित्व में आये हैं। साथ ही महिला नीति पंचायत राज में आरक्षण आदि की व्यवस्थाएं की गई हैं। मेरे विचार से महिला कल्याण जैसे अभियानों की उतनी आवश्यकता नहीं है जितना उन्हें सक्षम बनाने की है, ताकि वे अपना कल्याण स्वयं कर सकें। अभिभावकों

*४८/८, सागर सदन, गांधी नगर, पुलिस चौकी के पीछे, बस्ती-२७२००१ फोन : ०५५४२-२८८५८२

को चाहिये कि वे बच्चों को उच्च शिक्षा तक शिक्षित करें। उनका आचरण सही हो, वे सभ्य नागरिक बनें तथा परिवार, देश व समाज के लिये वे कल्याणकारी कार्य करते रहें।

भारतीय संदर्भ में देखा जाये तो महिलाओं के प्रति विषमता विभेद, हिंसा को समाप्त करने हेतु पर्याप्त संवैधानिक प्रावधान व कानूनी सुरक्षायें हैं। आवश्यकता है विद्यमान कानूनों को उचित रूप से लागू करने तथा संवेदनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की। सरकारें एवं शासन ध्यान भी दे रहा है फिर भी पुरुष-समाज स्त्री को सामाजिक ताने-बाने में इस प्रकार व्यस्त रखता है कि उसके पास अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिये समय ही नहीं बचता। अत: दुनिया की आधी आबादी अवैतनिक कार्य करके अपना कोई भी विकास नहीं कर पाती। महिलायें चाहती हैं कि उनके बच्चे पढ़ें-लिखें, लेकिन अशिक्षित मातायें घर का बजट नहीं बना पातीं। पुरुष वर्ग धन पर अपना अधिकार रखता है, कभी-कभी दुष्प्रयोग भी करता है। शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन केवल शिक्षा से ही नहीं, आचार-विचार एवं आचरण के पक्ष से भी संकीर्णता की जंजीरों को तोड़कर हृदय-घर के आकार को विशाल बनाना होगा जिसमें कोई भेदभाव न हो।



कविताएं

पूरी आजादी

मेरा देश पूरी तरह आजाद नहीं हुआ है
देश पूर्णत: आजाद होगा
जब 'मां' आजाद होगी।
'मां' अब भी आजाद नहीं है।
वह गुलाम है सड़ी-गली सामाजिक मान्यताओं की,
पुत्र-प्राप्ति की अंधी इच्छा की।
वह गुलाम है सामाजिक व्यवस्था के पोषक
अपने ही प्रियजनों की,
झूठे दंभ में डूबे पुरुष प्रधान समाज की।
इस गुलामी की
वह स्वयं भी बराबर की जिम्मेवार है
वह चाहे तो
गुलामी की जंजीरें तोड़ सकती है।
भ्रूणों के कुएं भरने से
हत्यारों को रोक सकती है।
अजन्मी कन्याओं को,
मृत्यु-दंड देते नापाक हाथ काट सकती है।
आजाद हो सकती है 'बेटी' को जन्म देकर
उसे कोख में असमय ही,
न मरने देने का दृढ़ संकल्प लेकर।



-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही', एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)

बेटी

खुद किसी की बेटी होकर,
वह बेटी नहीं चाहती है।
अपनी दुआ में उस खुदा से,
हर वक्त बेटा ही मांगती है।
बेटे के पैदा होने पर,
सौ-सौ शगुन मनाती है।
पर बेटी के आने पर,
लोगों को बताने से कतराती है।
पहले जब बेटी का जन्म होता,
कहते थे कि बरकत आई है,
परन्तु अब वह खुद ही,
अपनी बेटी को मरवाती है।

भाई के दिल से भी पूछो,
उसे भी बहन की चाहत है,
पर स्वार्थी होकर वह बेटी,
बेटों को जन्मे जाती है।
बेटे तो प्राय: बड़े होकर,
स्वार्थी भी हो जाते हैं,
पर धन्य है वह बेटी,
जिसे मां-बाप की फिक्र सताती है।
जो बेटी बड़ी होकर,
कल्पना, सुनीता और किरण बनी,
वह भी इस जग में आकर,
कुछ कर दिखाना चाहती है।
वह भी इस जग में आकर,
कुछ कर दिखाना चाहती है।



-श्री मंगत राय जिंदल, शोध छात्र, हिंदी विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला-१४७००२

सब महत्त्वपूर्ण अंग हैं सृष्टि के

एक अभागी बच्ची जिसे जन्म तो मिला
लेकिन फेंक दी गई कचरे में
उसकी आहत आत्मा ने
जन्म देने वाली मां से प्रश्न किया :
"नौ माह पेट में रखने के बाद भी
आज तुमने मेरे साथ यह व्यवहार किया
क्या यही होती है मां की ममता?
क्या यही करने के लिये तुमने
मेरा सृजन किया था?"
नारी द्वारा एक नारी-रत्न का
इस तरह अपमान ठीक नहीं है।
क्या मजबूरी थी, क्या विवशता थी?
क्यों मुझे कचरे में फेंक दिया?
यदि नारी ही नारी का अपमान करेगी तो
भला नारी को कौन सम्मान देगा?
मैं कन्या थी, तुम पुत्र चाहती थी,
अत: असमय लावारिस बना फेंक दिया।
अरे मैं बड़ी बनकर तुम्हारे लिये,
पुत्र जैसी भाग्यवान बनती।
देश के शीर्षस्थ पदों को सुशोभित करती,
अंतरिक्ष की सैर कर विश्व में,
तुम्हारा नाम रोशन करती।
पर तुमने
अनजाने में ही मेरे साथ दुर्व्यवहार किया।
मैं तुम्हारे बुढ़ापे की लाठी बनती,
मैं किसी के अरमान की सहचरी बनती,
तुमने सब आशाओं पर पानी फेर दिया।
पुलिस अदालत जो अपराधों की,
करती है विवेचना . . . ?
उसे नारी द्वारा नारी के साथ
किये जा रहे अपराधों की विवेचना कर
इस क्रूर कर्म को रोकने के लिये
कठोर कदम उठाने चाहिए।
मैं दोबारा कन्या-रत्न बनकर आऊंगी,
तब तुम मेरा अपमान मत करना।
यदि एक नारी ही नारी को जन्म देना नहीं चाहती,
ऐसे तो सृष्टि का क्रम ही बिगड़ जाएगा।
क्या केवल पुरुषों से वंश चल जायेगा?
पुत्र/पुत्री दोनों हैं समान जग में,
किसी का भी न हो अपमान जग में
सब महत्त्वपूर्ण अंग हैं सृष्टि के,
अत: किसी के साथ बुरा व्यवहार मत करो।
मुझे गर्भ में मत मारो,
कन्या भ्रूण-हत्या मत करो।
मेरी भी आवाज सुनो!
मुझे भी जन्म लेने दो!



-श्री सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, अग्रवाल न्यूज एजेन्सी, हटा, दमोह (म. प.)-४७०७७५

प्रकृति के अनुकूल रहिए!

-डॉ. नरेश*

हमारे अनेक शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का कारण प्राकृतिक नियमों की अवहेलना करना है। प्रकृति बड़ी दयामयी है। इसकी अनुकंपा यदि खुले हाथों प्राप्त न हो तो सांस लेने भर को हवा न मिले। सर्दी में धूप, गर्मी में हवा, सूखे में वर्षा, सभी कुछ प्रकृति ही तो देती है हमें। लेकिन प्रकृति अपनी अवज्ञा सहन नहीं करती। हम बे-मौसम पौधा रोपते रहें। पूरी शक्ति, पूरी बुद्धि लगा दें अपनी, पौधा फलेगा नहीं। सारा ज्ञान-विज्ञान लगाकर हम उसमें फल भी लगा दें, तो भी फल का स्वाद वह नहीं बन पाएगा जो उसका प्राकृतिक स्वाद होता है।

सर्दी के मौसम में नंगे बदन निकल जाइए टहलने के लिए रात में। प्रकृति के विधान की अवज्ञा कीजिए, ललकारिए प्रकृति को, चैलेंज कीजिए उसके सिस्टम को। उसी क्षण दंड दे देगी प्रकृति आपकी धृष्टता का। बुखार से शरीर को तपा डालेगी, फेफड़ों में पीड़ा उत्पन्न कर देगी, खांसी-जुकाम का प्रकोप उतार देगी आपके ऊपर। गर्मी में खूब गर्म कपड़े पहनकर धूप में बैठ जाइए, प्रकृति के विधान की अवहेलना कीजिए। परिणाम का अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं।

जो व्यक्ति प्रकृति के जितना अनुकूल चलता है, उतना ही निरोग रहता है। प्रकृति की प्रत्येक अवहेलना किसी न किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट को जन्म देती है। आज का मनुष्य तरह-तरह की बीमारियों से पीड़ित है। कहीं भी देख लीजिए, हर अस्पताल रोगियों से अटा पड़ा है। छोटे-से-छोटे नगर में भी दो-चार एम. डी., एम. बी. बी. एस. डॉक्टर आपको मिल जाएंगे। किसी क्लीनिक में भी भीड़ की कमी नहीं है। कारण है हमारा प्रकृति की अवहेलना के द्वारा एक नयी शहरी सभ्यता को विकसित करने का प्रयास। प्रकृति ने गर्मी बनाई थी कि मानव शरीर पसीने से भीगे और उसके भीतर के अतिरिक्त साल्ट्स, कीटाणु, जर्म्स निकल जाएं। हमने एयर-कंडीशनिंग के द्वारा यह व्यवस्था कर ली कि पसीना ही न आने पाए। प्रकृति ने सर्दी बनाई थी कि शरीर घृतादि पचा सके लेकिन हमने सेन्ट्रली-हीटिड घरों की व्यवस्था के द्वारा शरीर को सर्दी लगने ही नहीं दी। घी-दूध-मक्खन तो सब मना कर रहे हैं डॉक्टर। फैट्स नहीं खाइए, इससे ब्लड-कलॉस्ट्रोल बढ़ता है। हरी सब्जियां आप नहीं खाते हैं क्योंकि विज्ञान ने आपको रेफ्रिजिरेशन की सुविधा उपलब्ध करा दी है। पौष्टिक तत्त्व का नाश होता है रोफ्रिजिरेशन में, होता रहे, सुविधा तो है। आठ दिन की सब्जी एक बार में पका कर रख दी फ्रिज में। कौन बनाए रोज-रोज? निकाली, गर्म की, खा ली!

परिणाम? वही प्रकृति का प्रकोप। ज्ञान-विज्ञान कहां तक दौड़ेगा? कहां तक प्रकृति का पीछा करेगा? प्रकृति ने एक फोड़ा दे दिया शरीर के किसी भाग में, जिसमें तारें-सी निकलती हैं और पूरे शरीर में फैलती जाती हैं। जहां-जहां इन तारों का अधिपत्य जमता है शरीर का वह अंग व्यर्थ हो जाता है। ज्ञान-विज्ञान ने इसे केंसर का नाम दे दिया लेकिन

*१६९, सेक्टर-१७, पंचकूला-१३४१०९

वैज्ञानिक अभी तक यह ही नहीं खोज पाया है कि केंसर होता क्यों है, तो इसके इलाज का तो प्रश्न ही नहीं उठता। केंसर को तो बड़ी बीमारी माना जाता है, छोड़िए इसे। वायरस को ही लीजिए। हवा में से कोई कीटाणु शरीर के भीतर चला आता है और भट्‌टी-सा तपा देता है शरीर को। आज तक डॉक्टर लोग इसका कारण नहीं खोज पाए हैं, इसलिए इसका इलाज भी कोई नहीं है। बुखार कम करने की दवाएं लेते रहिए। अपना समय लेकर वायरस स्वयं चला जाता है। प्रकृति ने जितनी देर सजा देनी थी, दे दी। प्रकृति सजा दे लेती है, तो हर बीमारी का इलाज अपने आप हो जाता है।

यही अवस्था मन की भी है। हम अपने सोचने में, समझने में, विचारशीलता में, जहां भी अप्राकृतिक, एबनॉर्मल होते हैं, वहीं पिटते हैं। आपके मुंह पर थप्पड़ मारा गया है लेकिन आपको क्रोध नहीं आ रहा है। आपको असहय सिर-दर्द हो रहा है लेकिन आप तड़प नहीं रहे हैं। आपको एक से एक मजेदार चुटकुला सुनाया जा रहा है लेकिन आप हंस नहीं रहे हैं। तो क्या आप प्राकृतिक हैं? नॉर्मल हैं? निश्चित ही नहीं। साधारण से असाधारण, प्राकृतिक से अप्राकृतिक होना ही मानसिक कष्टों का जन्मदाता है। अपने मानसिक क्लेशों को एक-एक करके उठाइए और ध्यानपूर्वक विश्लेषण कीजिए। हम पाएंगे कि प्रत्येक क्लेश के पीछे हमारी असाधारणता, अप्राकृतिकता, असहजता विद्यमान है। क्यों होने दिया हमने अपने को असहज? क्यों न स्थिर रख सके हम अपनी प्रकृति को? निर्णय लीजिए कि आज तक जो हुआ, सो हुआ, कल से किसी अवस्था में भी हम अपने को असहज नहीं होने देंगे और फिर देखिए कि कैसी मानसिक शांति का उदय होता है हमारे भीतर और कैसे एक-एक करके सारे मानसिक क्लेशों, मानसिक संतापों और मानसिक कष्टों से मुक्त होते चले जाते हैं हम!



कविता

जितु जंमहि राजान

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ**

जगत गुरदेव जीओ का, यह बहुमूल्य फरमान।
"सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥"
समाजों में देखी थी नारी की बहुत दुर्दशा,
इसी लिए बोले थे, सत्य का बोल पुरख सुजान।
कम-अक्ल अहंकारी,
'पांव की जूती' कहते नारी को
जो उनकी मां-बहिन-बेटी,
जो गृहस्थी आधार ईमान।
उसका मोल-भाव करते,
खरीदते थे, बेचते थे
जैसे दुकानों में कोई वस्तु,
मारते और पीटते
करते थे जीवन वीरान।
नये युग का आगाज
जगत गुरदेव जीओ के पावन ये विचार,
इसी आधार-आगाज से बढ़ी आगे नारी,
और पा ली आज की नयी पहचान।





*पत्तन वाली सड़क, शाला पुराना, जिला गुरदासपुर। मो. ९४१७१-७५८४६

बच्चों को राष्ट्र के होनहार नागरिक बनाने में मां की भूमिका महत्वपूर्ण

*-डॉ मनमोहन सिंघ**

बचपन के संस्कारों का चरित्र के विकास में बहुत बड़ा हाथ है। जैसे कि मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि बचपन की घटनाएं, वातावरण व संस्कार व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन पर अपनी अमिट छाप छोड़ जाते हैं, इसलिए प्रत्येक मां-बाप का कर्त्तव्य है कि वह अपने बच्चों का बड़ी सावधानी के साथ पालन-पोषण करे तथा उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा देकर अपना व्यवहार व वातावरण उनके अनुकूल रखकर उन्हें राष्ट्र का होनहार नागरिक बनाये। बच्चों के चरित्र-विकास में वैसे तो माता-पिता दोनों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है परन्तु फिर भी मां की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण होती है। अक्सर हाथ पकड़कर मां ही बच्चे को चलना सिखाती है। मां की बचपन में दी हुई शिक्षा बच्चे के दिमाग में हमेशा के लिए अपना प्रभाव छोड़ जाती है।

नकल करने की प्रवृत्ति बच्चों में शुरू से ही छुपी रहती है। नकल करके ही बच्चे चलना, बोलना, खाना-पीना, खेलना तथा बहुत से ऐसे कार्य करते हैं, जिन्हें सिखाने की जरूरत ही नहीं पड़ती, बल्कि वे अपने आप ही सीख जाते हैं। बच्चे जो अपने भाई-बहन, पड़ोसियों व बड़ों को करते हुए देखते हैं वे खुद ही ऐसा करने की कोशिश करते हैं। परन्तु इन सबसे अलग, सबसे अधिक प्रभाव साथ रहने वाली 'मां' का बच्चे के मन पर पड़ता है। बच्चों में अच्छे संस्कार पैदा करने के लिए मां-बाप का प्यार, सुरक्षा की भावना, साथियों का सहयोग, अध्यापकों का मार्गदर्शन आदि बातें भी उतनी ही जरूरी हैं जितने कि साफ-सुथरे कपड़े व पौष्टिक भोजन। मां को इस बात का हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि वह बच्चों के मान-सम्मान की उनके सहयोगियों के सामने पूरी तरह रक्षा करे। अगर बच्चों से कोई गलत कार्य हो गया है तो उन्हें डांट-फटकार न लगाई जाये व मजाक भी न उड़ाया जाये। बच्चों को एक-दूसरे के खुशी-गमी के दिनों व त्योहारों में परस्पर सहयोग देना सिखाया जाये। बच्चों के अच्छे दोस्त बनाने में उनकी सहायता करनी चाहिए।

बहुत-से घरों में अक्सर यह कहते सुना जाता है कि बच्चे सुनते ही नहीं और मनमानी करते हैं। माताएं सारा दोष बच्चों तथा स्कूल की शिक्षा पर थोप देती हैं और अपने ऊपर कोई जिम्मेवारी नहीं लेना चाहती, जबकि इस बात की ज्यादा जिम्मेवारी मां की होती है। यह ठीक है कि कामकाजी माताओं को अपने बच्चों के पास बैठने तथा उनकी देखभाल करने का बहुत समय नहीं मिलता, परन्तु घरेलू माताएं भी अपने बच्चों को आया या नौकरों के पास छोड़कर अपने आप क्लबों या पार्टियों में मनोरंजन करने के लिए चली जाती हैं। वे यह कभी नहीं सोचतीं कि इसका बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है। माताओं को चाहिए कि वे अपना सारा ध्यान बच्चों की शिक्षा तथा उनके प्रतिदिन के काम-काज पर केन्द्रित करें। जब

*८८९, फेज १०, मोहाली-१६००६२

बच्चे परिवार के सदस्यों को, आस-पड़ोस के लोगों को सहयोग देते हुए, गरीबों के प्रति हमदर्दी दिखाते हुए, समय का उचित प्रयोग करते हुए तथा बड़ों का आदर करते हुए देखते हैं तो बच्चों में ये गुण अपने आप ही आ जाते हैं। माताओं को चाहिए कि वे अपने बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार कार्य का भार सौंपकर अपना भार हल्का करें तथा बच्चों में मिल-जुलकर काम करने की भावना पैदा करें। बच्चों के मानसिक व शारीरिक विकास के लिए खेलों का प्रबंध करना भी जरूरी है। जिन बच्चों को खेलने का उचित मौका नहीं मिलता उनकी मानसिक व शारीरिक तंदरुस्ती संतोषजनक नहीं होती। अगर कोई कार्य करवाना हो तो प्रतियोगिता के रूप में करवाने से बच्चों में मनोरंजन भी होगा तथा कार्य भी जल्दी हो जायेगा।

कई बच्चे बहुत जिद्दी होते हैं। वे बात-बात पर रोने, चिल्लाने व चिड़चिड़ाने लग पड़ते हैं। ऐसा अक्सर वे बच्चे करते हैं जिनके प्रति माताएं विशेष ध्यान नहीं देतीं या वे बच्चे जो आया या नौकरों के पास पलते हैं। बच्चों को बुरी आदतों से भी बचाना चाहिए। छोटे बच्चों को अंगूठा या उंगलियां न चूसने दें, क्योंकि ऐसा करने से होठों का आकार बिगड़ने का भय रहता है तथा दांत टेढ़े हो जाते हैं। अगर बच्चे से कोई वस्तु टूट जाये तो उसे ऐसा अपराध छुपाने की कोशिश न करने दें। अगर वह अपराध छुपाने की कोशिश करेगा तो फलस्वरूप झूठ बोलना भी सीखेगा।

अगर किसी बच्चे को चोरी की आदत पड़ जाये तो इसका कारण ढूंढने की कोशिश करें। ज्ञात करना चाहिए कि कहीं वह खाने-पीने की चीजों व दूसरी जरूरत की वस्तुओं में कमी के कारण तो चोरी नहीं करता। बच्चों में कभी भी हीनता का भाव न पैदा होने दें, क्योंकि इससे बच्चे की उत्कृष्ठा के विकास में रुकावट पैदा होती है। उसके मनोरंजन, बाहर घूमने-फिरने व खेलने का प्रबंध भी होना चाहिए। उनमें वक्त पर कार्य करने की आदत डालें। ऐसा करने से भी उनमें समय का सदुपयोग करने की भावना का जन्म होगा। घर में प्रत्येक बच्चे के साथ एक जैसा ही व्यवहार करें।

बच्चे ज्यों-ज्यों बड़े होते हैं तो उनकी सामाजिक वस्तुओं के प्रति रुचि बढ़ती है। फिर वे प्रत्येक बात पर जैसे कि क्या, कब आदि का प्रश्न करने लग जाते हैं। उस समय उन्हें डांटना या गलत उत्तर देना उचित नहीं है, बल्कि उनके प्रत्येक सवाल का बहुत धैर्य के साथ सही उत्तर देना चाहिए। इस प्रकार उनकी जिज्ञासा की प्रवृत्ति बढ़ेगी व बच्चे की बुद्धि का विकास भी होगा। बच्चों द्वारा अच्छा कार्य करने पर कभी-कभी इनाम देकर उनको उत्साहित भी करना चाहिए। इसके साथ ही मां को बच्चों के पौष्टिक आहार के सम्बंध में विशेष ध्यान देना चाहिए। उनके शारीरिक व मानसिक विकास में कोई भी रुकावट पैदा नहीं होने देनी चाहिए। आज भारतीय महिलाएं आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक जीवन में स्वतंत्र हैं तथा अपनी महत्वपूर्ण भूमिकायें राष्ट्रीय धरातल पर निभा रही हैं।

नि:संदेह बच्चों को राष्ट्र के होनहार नागरिक बनाने में मां की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण है।



वृद्धाश्रम : गिरते मानवीय मूल्यों का प्रतीक

-डॉ. सुनील कुमार*

किसी ने सच ही कहा है कि हम बड़े-बुजुर्गों की सेवा करके न केवल नैतिक रूप से सशक्त बनते हैं बल्कि बड़े उत्तम फल की प्राप्ति भी करते हैं। इस सम्बंध में संस्कृत का एक प्राचीन कथन है :

अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्द्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।

अर्थात् जो व्यक्ति अपने बड़े-बूढ़ों का सम्मान सहित अभिवादन करते हैं तथा उनकी नित्य सेवा करते हैं, उनकी आयु, विद्या, यश और बल नामक चारों बातों में वृद्धि होती है।

लेकिन वर्तमान में स्थिति इसके विपरीत दिखाती देती है। आज वृद्धाश्रम की बढ़ती महत्ता हमारे मुंह पर, हमारी आधुनिकता पर एक तमाचा है। जो मां-बाप अपनी जिंदगी भर की कमाई, अपना सब कुछ अपनी औलाद पर न्यौछावर कर देते हैं, उन्हीं मां-बाप को आजकल घर से निकलने के लिए मजबूर कर दिया जाता है, क्योंकि वे अब लाचार हो चुके होते हैं। शायद औलाद यह सोचती है कि हम कभी भी बूढ़े नहीं होंगे। वृद्ध होने पर उनको थूकने आदि की वजह से ही गंदगी फैलाने की मशीन समझा जाता है। उनको यह कहकर चुप रहने पर विवश कर दिया जाता है कि उन्हें किसी चीज का नहीं पता। हमारे मां-बाप चाहते हैं कि बुढ़ापे में उनका बेटा, उनकी बहू सेवा करें, लेकिन उनकी सेवा को बेकार माना जाता है। आखिर कब तक अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाले माता-पिता को घर से निकलने, दर-दर भटकने, वृद्धाश्रमों में आश्रय लेने के लिए विवश किया जाता रहेगा? हमें स्थिति को बदलना है। मां-बाप से बढ़कर दुनिया में कुछ भी नहीं है। सत्य ही है:

माता-पिता की सेवा करे जो, चार तीर्थ-धाम फल पावे।
माता-पिता खुश होकर जो आशीर्वाद दे दें, वो भगवान से भी टाला न जावे।

मात्र तीर्थ-स्थलों की यात्रा करना काफी नहीं होगा, जीवन सफल व सार्थक तभी होगा जब हर औलाद अपने मां-बाप की सेवा करेगी। हमारा जीवन सफल तब होगा जब किसी भी वृद्ध के साथ अन्याय नहीं होगा। जब तक हर औलाद अपने मां-बाप की सेवा नहीं करेगी तब तक वृद्धाश्रम बनते रहेंगे। हमें यह समझ लेना है कि व्यक्ति के ऊपर ऐसा कर्ज जो सदैव होता है वह माता-पिता का है, जिसे हम कभी नहीं चुका सकते। कहने में तो वो एक इन्सान ही होते हैं लेकिन यदि उनकी तुलना भगवान से की जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। मां केवल जन्म ही नहीं देती बल्कि अपना दूध पिलाकर, पाल-पोस कर हमें चलने योग्य भी बनाती है। उसकी यही इच्छा होती है कि उनकी संतान सदैव खुश रहे। माता-पिता अपना सब कुछ बच्चों को सौंप देते हैं और उसके बदले में वो हमसे कुछ नहीं मांगते सिवाय प्यार-सत्कार के। अगर हम अपना जीवन भी इनके चरणों में रख दें तो भी हम इनका कर्ज नहीं उतार सकते। यदि हम अपने माता-पिता का थोड़ा-बहुत कर्ज उतार सकते हैं तो उसका केवल एक ही रास्ता है और वो है उनकी 'सेवा

*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, श्री अमृतसर।

करना', क्योंकि माता-पिता का कर्ज संसार की किसी अन्य वस्तु से नहीं बल्कि प्यार-सत्कार से उतारा जा सकता है। यह उचित ही है कि:

जिसे मिल गया माता-पिता का प्यार,
समझो हो गया जीवन का उद्धार।
संतान अच्छी हो या बुरी,
वो देते हैं समान प्यार।

माता-पिता का व्यवहार हमारे प्रति चाहे जैसा भी हो, चाहे वे डांटते हों या ज्यादा लाड़-प्यार करते हों, सच्चाई यह है कि हमारे अभिभावकों ने हमें शिक्षित किया है, अपनी मेहनत की कमाई हम पर लुटाई है। इस 'एहसान' को 'फर्ज' का नाम देकर हम अपने फर्ज से मुंह मत मोड़ें। वे जीये जा रहे हैं हमारे लिए। कभी उनकी विवशताओं, परिस्थितियों से किये समझौतों को बारीकी से खुद से जोड़कर देखें, मैं मानता हूं कि हम अपनी जिंदगी में वैसी विवशताओं और समझौतों से भरे दौर कभी नहीं चाहेंगे। यह उक्ति कितनी खरी है--'ऋण लेकर न लौटाने वाले, गुणीजनों को दोष लगाने वाले, माता-पिता-गुरु की सेवा न करने वाले और बिना बात क्रोध करने वाले चंडाल होते हैं।' कभी गौर करें तो हमें हमेशा मां की आंखों में ममता तथा पिता की आंखों में कर्त्तव्य ही दिखाई देगा। अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि हमें अपने सद्व्यवहार के साथ वृद्धाश्रमों की आवश्यकता पर रोक लगानी है। मां-बाप की सेवा से बढ़कर दुनिया में कुछ नहीं। हमारे माता-पिता, दादा-दादी तथा अन्य रिश्तेदारों को वृद्धाश्रमों की जरूरत न पड़े इसलिए आओ संकल्प लें कि हम अपने बड़ों की सेवा में कोई कमी नहीं छोड़ेंगे। 

FORM IV

१.	प्रकाशित करने का स्थान	:	कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
२.	प्रकाशित करने का समय	:	प्रत्येक माह की पहली तारीख
३.	मुद्रक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
४.	प्रकाशक का नाम	:	स. दलमेघ सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
५.	संपादक का नाम	:	स. सिमरजीत सिंघ
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता	:	संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर
६.	मालिक	:	शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर

मैं सिमरजीत सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णतः सही है।

हस्ताक्षर/-
(सिमरजीत सिंघ)
संपादक, गुरमति ज्ञान।

तारीख-०१/०३/१०

हमारा बहुमूल्य सरमाया : बुजुर्ग

*-श्री वरगिस सलामत**

प्रत्येक जन चाहे वह औरत है या मर्द उसका जीवन एक विचारधारा के अंतर्गत गुजरता है। विचारधारा व्यक्ति के शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक विकास पर प्रत्यक्ष रूप में प्रभाव डालती है। यह विचारधारा उसको घर, समाज, वातावरण और शासन-प्रणाली से प्राप्त होती है और उसका प्रभाव घर, समाज, वातावरण व शासन-प्रणाली पर भी पड़ता है। नकारात्मकता और सकारात्मकता विचारधारा के दो क्रियाशील पहलू हैं। इन दोनों पहलुओं में संघर्षशील विचारधारा मनुष्य के स्वभाव को बनाती है। घर-परिवार, समाज व वातावरण रूपी भठ्ठी में तप कर ही विचारधारा प्रौढ़ या परिपक्व होती है जो बुजुर्गी के आलम तक प्रत्येक व्यक्ति के स्वभाव में से झलकती रहती है।

आदि काल से औरत को घर-परिवार के कार्यों में प्रौढ़ (सियाणी) माना गया है तथा मर्द को हमेशा सामाजिक व सांझे कार्यों के लिए प्रेरा या सराहा गया है। शायद यही कारण है कि हमारे समाज में बुजुर्ग पुरुष को बोहड़/बरगद और वृद्ध औरत को छायादार बेरी कह कर विचारा गया है। शायद इसलिए कि बरगद का पेड़ ज्यादातर सांझी जगहों की छाया बनता है और बेरी का पेड़ अक्सर घर-आंगन को ठंडा (शीतल) रखता है।

धर्म हमारी विचारधारा के अनुसार हमारे तन, बुद्धि और आत्मा के विकास-विगास में बहुत बड़ा रोल अदा करता है क्योंकि धर्म हमारे जीवन में व्याकरण का कार्य करता है। जैसे व्याकरण हमारी भाषा की त्रुटियों को दूर करती है और भाषा में शुद्धता बनाए रखती है वैसे ही धर्म जीवन की त्रुटियों को दूर करके हमारे जीवन में शुद्धता लाता है। दुनिया के सभी धर्मों में बुजुर्गों की सेवा को परमात्मा की सेवा के समान बताया गया है। एक यहूदी कहावत कहती है कि हर समय मशरूफ रहने के कारण खुदा हर जगह नहीं पहुंच सकता इसलिए उसने अपना सरूप 'मां' धरती पर भेजी।

प्रत्येक जन आशावाद, निराशावाद, आस्तिकवाद, नास्तिकवाद के चक्के में चक्कर लगाता जीवन-चक्कर में से गुजरता जाता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने विचारों की जुगाली करता जाता है, जिसका प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव हमारी आने वाली नस्ल पर पड़ता है। आयु-चक्र में बुढ़ापा व्यक्ति का आखिरी पड़ाव है तथा युवाओं को बुजुर्गी के इस पड़ाव को मनोवैज्ञानिक ढंग से समझने की आवश्यकता है। एक जनरेशन गैप को मस्तिष्क में रखकर उनके प्रति अपनी जिम्मेवारियां पहल के आधार पर समझने की जरूरत है। उनके प्रति हमारी पारिवारिक, सामाजिक, प्रशासनिक व धार्मिक जिम्मेवारियां निश्चित रूप में बनती हैं, जिनको नैतिक व मनोवैज्ञानिक ढंग से समझना चाहिए।

सुनने, पढ़ने व देखने-विचारने में यह बात मोटे तौर पर सामने आई है कि हम भारतीय लोग अपने जीवन में अपने लिए कम जीते हैं और अपनी संतान के लिए ज्यादा जीते हैं; अपना ज्यादा जीवन संतान को सैटल करने

***६९२, सुंदर नगर तेलियां वाल रोड, नजदीक रैहमां पब्लिक स्कूल, बटाला (गुरदासपुर) -१४३५०५*

में लगाते हैं तथा यह तथ्य भी हमसे छिपे नहीं हैं कि आज हमारे बुजुर्ग अपना जीवन अपने बच्चों से अलग, एकांतमय ओल्डएज होम में व्यतीत कर रहे हैं। यह भी सच है कि ज्यादा बुजुर्ग, जो घरों में परिवारों सहित रह रहे हैं, उनके बच्चे उन्हें भार समझते हैं या घर के ताले से ज्यादा कुछ नहीं समझते। कैसी विडंबना है कि हम किसी धर्म-स्थल पर की गई सेवा तक ही सीमित रहते हुए घर पर बैठे बुजुर्गों को रोटी-पानी देना फजूल का बोझ समझते हैं।

हम अपनी कदरों-कीमतों को अपने जीवन में से इस तरह झाड़ रहे हैं जैसे वस्त्रों में से किसी कीट को झाड़ते हैं। बुजुर्गी के स्वभाव को भी हम बुढ़ापे की जीर्ण-शीर्ण चादर समझ कर अलग कर देते हैं।

व्यक्तिगत तौर पर, पारिवारिक तौर पर हमें अपने बुजुर्गों को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझने की आवश्यकता है। अनुभव विचारधारा की भट्ठी में तप कर कुंदन बन चुका होता है। उनको न समझकर, घरों से अलग रखकर या घर के किसी स्टोरनुमा स्थानों में उनकी चारपाई लगाकर, हम उनका तिरस्कार करते हैं व नैतिक तौर पर पाप करते हैं।

स्वार्थवाद, निजवाद व अहं के कारण कई परिवारों ने अपने ही बुजुर्गों की बुढ़ापे की लाठी बनने की बजाए उन पर ही लाठियां चलवाई हैं। यहां तक कि जिन बुजुर्गों ने हाथ पकड़कर चलना सिखाया उन्हीं हाथों में धन-सम्पत्ति के लालच में अदालत के सम्मन तक पकड़वाए हैं। भौतिकवाद व विकासवाद की दौड़ में मनुष्य अपने परिवार व बुजुर्गों को भूलने की राह पर चल पड़ा है। अकेलेपन, बेरुखी व बेकदरी के कारण हमारा बुजुर्ग-रूपी सरमाया डेरों, धार्मिक-स्थलों, ओल्डएज होमों में घर-परिवार तथा अन्य समाज से अलग होकर अपनी बुजुर्ग हड्डियां रगड़ रहा है। आओ! कवि की इन पंक्तियों द्वारा हम अपना आत्मविश्लेषण करें :

विकास की बाढ़ में, मैं इतना बह गया।
एक मकां बनाया कि घर ढह गया।
छोड़ आया मैं बाबा बोहड़,
भूल गया घनछावीं बेरी,
मैं अपने ही गमलों का रखवाला रह गया।



और विशेषांक अवश्य निकालते रहना

मैं "गुरमति ज्ञान" मासिक का लाईफ मैंबर हूं। पिछले वर्ष से पूर्ण रूप से यह पत्रिका पढ़ रहा हूं। अति प्रसन्नता होती है जब यह हर माह मेरे हाथ में होती है।

काफी समय से पत्र लिखने की चाह थी परन्तु नहीं लिख सका। "गुरमति ज्ञान" नवंबर २००९ के "बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक" में सारे लेख एक से बढ़ कर एक हैं, जो प्रशंसनीय हैं। आप जी तथा सभी लेखकों को बहुत-बहुत बधाई तथा नया साल मुबारक हो।

जनवरी २०१० में "बुजुर्गी जीवन" के लिये कुछ सुझाव नामक लेखनी बढ़िया है तथा प्रशंसा करने योग्य है।

पत्रिका का पेपर, छपाई, लेख बढ़िया हैं तथा कीमत कम रखी गई है। मैं वाहिगुरु जी से इस पत्रिका की लंबी उम्र की कामना करता हूं। इस पत्रिका से बहुत जानकारी मिलती है। पत्रिका को अगर 'गागर में सागर' कहूं तो भी कम है।

आप कृप्या इसी तरह कभी-कभार किसी न किसी विषय पर और विशेषांक अवश्य निकालते रहना। आप इस विशेषांक के लिए बधाई के पात्र हैं। जब तक यह पत्रिका हाथ में नहीं आ जाती इसका इंतजार रहता है।

-राज कुमार जोशी, फिल्लौर (लुधियाना)

कविता

गौरव गाथा

-श्री महेश्वर ओझा महेश*

नारी के रूप दिए रण चंडी के,
रूद्र के रूप दिए मरदानी।
दीन के हीत सुबन्धु के मीत,
धर्म पुनीत में दी बलिदानी।
सत श्री अकाल अनन्ता के,
भक्ति सुधा सुविचारी प्रमानी।
मंगल रूप सरूप गोबिंद के,
पूजे 'महेश' सुवेश सुवानी।
प्राची में प्रभा प्रचुर, साहस सुयश शूर,
तेज वीरताई भरी, दुर्बल जन में।
सिंघ के प्रचंड वेग, तेज तलवार तेग,
धर्म, धीरज, डेग, सिक्ख धरी मन में।
दइत दलन अवतार भूमि भार हरि,
जालिम तमीचर के मारन भूवन में।
ऊंचे रणवीर शूरवीर रूप गोविन के।
धरम उद्धारन संहारन यवन के।
गुरु के सिक्ख धरे गरिमा उर,
वीरता धीरता ध्यान सुराई।
गोबिंद ज्ञान गहे गुन गौरव,
नीत सुमीत सवन्ध बनाई।
कृपाणधारी महा धनी धनु तेग के,
नाशे विधर्मी धरी तनु आई।
गान 'महेश' महावीर सिंघ के,
गावत गुन सके न गुनाई।
कसी के तुरंग तंग, तीर तलवार संग,
करत प्रचंड जंग, शत्रु न संहार के।
रूद्र रूपधारी रंग, करि अरि अंग भंग,
गरजत सिंघ ढंग, भीरे ललकारी के।
कुंजर के भाल फारी, तुरंग सवार मारी,
पितर दे तरपन, रिपु रक्त ढारी के।
सुनत केहरी नाद, तजी रण मरजाद,
जालिम हैं छिपे जात, गिरिवन झारी के।
वढ़ल सिरवन शाख, शकति सकल ओर,
सगरो गुंजल नाम, अकाली ककारी के।
धनुष, कृपाण, बाण, हर हथियार खेत,
बाजी चढ़ी अभेयास करे रणधारी के।
गुरु के आदेश पाई, करत आदर जन,
बहिनी, महतारी, बेटी, माने पर-नारी के।
श्रम के कमाई अन्न, बाटी खात आपस में,
केहुना 'महेश' दुखी, कुल परिवारी में।
मातु-पितु गुरू-जन, सज्जन के आदर से,
करे सम्मान झुकी चरण परवारी के।
सत् श्री अकाल जपे, वाहे गुरदेव जी के,
बहिनी, मतारी, बेटी, माने पर नारी के।
केश, कंघा, कड़ा, कच्छ, लंगोट के कसी कटि,
लोई के कृपाण तीर मारत सुरारी के।
माई दूध पागयश, सूरता साहस नश,
पंगति, संगति, प्रीत, जाति-भेद क्षारी के।
गुरु तेग बहादर तेज दिए तन,
धर्म के हित बने बलिदानी।
अजीत, जुझार, किशोर जूझे जंग,
तोर दोउ कुल धर्म गुमानी।
फतह, जोरावर, नन्हें-मुन्हें दोउ,
धर्म के हित दीवार चुनानी।
पूजे गुरु गोबिंद के सिंघ के,
धरम धुरीन 'महेश' है जानी।
गुरु गोबिंद जी, धर्म धुरंधर,
धीर महामती वीर ज्ञानी।
धर्म के हित सहे दुख कोटिन,
चार सपूत दिए बलिदानी।
साहस शौर्य दिए खालसा पंथ,
मर्द-औरत बने सिंघ-सिंघानी।
युद्ध अनेक किए मुगलान से,
कृति 'महेश' वखानत बानी।



*साकेत भवन, दुर्गा टाकीज से सटे (उत्तर), सिविल लाईन, बक्सर (बिहार)-८०२१०१

गुरबाणी राग परिचय : २७

राग कानड़ा एवं राग कलिआन

*–स. कुलदीप सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में राग मलार के बाद क्रमांक २८ पर राग कानड़ा की बाणी २५ पन्नों (१२९४-१३१८) अंकित है तथा उसके बाद राग कलिआन की बाणी क्रमांक २९ पर आठ पन्नों (१३१९-१३२६) में अंकित है। इन दोनों रागों की बाणी का सम्मिलित अध्ययन किया जा सकता है। गुरमति संगीत के अनुसार ये दोनों राग दीपक राग के पुत्र हैं :

गउरा अउ कानरा कल्याना ॥
असट पुत्र दीपक के जाना ॥ (पन्ना १४३०)

राग कानड़ा देसाख, जैतसरी, सुधनहा और ललित को मिलाकर बनता है। इसमें दीपक की छाया है। इस राग के अन्य रागों से मिलकर कई रूप हैं, जैसे दरबारी कानड़ा, नाइकी कानड़ा, बागेसरी कानड़ा, शहाना कानड़ा, रेवती कानड़ा और अभोगी कानड़ा। कानड़ा के इन रूपों का वर्णन 'नवीन गुरमत संगीत' पुस्तक में किया गया है।

राग कलिआन तनक, कमोद और गौड़ रागों के मिलने से बनता है। इसमें भी दीपक की छाया है। इसके भी अन्य रागों से मिलकर कई रूप हैं, जैसे साम कल्याण, यमन कल्याण, पूरीआ कल्याण, स्री कल्याण, कल्याण भोपाली आदि।

राग कानड़ा और कलिआन दोनों रागों में केवल श्री गुरु रामदास जी तथा श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी का चयन है। भक्त-बाणी के अन्तर्गत राग कानड़ा का समापन भक्त नामदेव जी के एक शबद से किया गया है। राग कलिआन में भक्त-बाणी नहीं है।

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद (यू. पी.)*

राग कानड़ा में बाणी का विस्तार राग कलिआन से अधिक है। राग कानड़ा में श्री गुरु रामदास जी के १२ शबद दो समूहों में हैं। पहले छः शबद चउपदे घरु १ के शीर्षक से दिये गये हैं तथा दूसरे समूह के शबद पड़ताल घर पांच के अन्तर्गत हैं। पहले समूह के शबदों की शैली समान है। सभी शबद मन को सम्बोधित हैं। दूसरे समूह के शबद दोपदे है।

श्री गुरु रामदास जी के शबदों के बाद श्री गुरु अरजन देव जी के शबद कई गायन-पद्धतियों (घरों) में गायन शीर्षक से दिये गये हैं। क्रमांक २ से ११ तक विविध घरों में गायन शबदों की संख्या ५० है। घरु २ के अन्तर्गत दिया गया निम्न शबद मानव-प्रेम का संदेश देता है। 'नवीन गुरमत संगीत' में इसे शहाना कानड़ा के रूप में गायन के उदाहरण में रखा गया है :

बिसरि गई सभ ताति पराई ॥
जब ते साधसंगति मोहि पाई ॥१॥रहाउ॥
ना को बैरी नही बिगाना सगल संगि हम कउ बनि आई ॥१॥
जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ एह सुमति साधू ते पाई ॥२॥
सभ महि रवि रहिआ प्रभु एकै पेखि पेखि नानक बिगसाई ॥३॥ (पन्ना १२९९)

श्री गुरु अरजन देव जी के सतिगुरु की महिमा में निम्न शबद घरु ४ के आरंभ में हैं। जो सर्वोच्च परमात्मा को नमस्कार करता है, ऐसे गुरु पर मैं बलिहार जाता हूं। वह स्वयं मुक्त है, मुझे भी तार देता है। उस गुरु के गुणों

की सीमा नहीं। मैं कौन-कौन से गुण कहूं? वे गुण लाखों-करोड़ों हैं। उन पर कौन विचार कर सकता है? उसके गुणों में लीन होकर मैं गूढ़े प्रेम के लाल रंग में रंग गया हूं। वह रस ऐसा है जैसे गूंगा स्वादिष्ट वस्तु चख कर मुस्करा देता है :

नाराइन नरपति नमसकारै ॥
ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै ॥१॥रहाउ॥
कवन कवन कवन गुन कहीऐ अंतु नही कछु पारै ॥
लाख लाख लाख कई कोरै को है ऐसो बीचारै ॥१॥
बिसम बिसम बिसम ही भई है लाल गुलाल रंगारै ॥
कहु नानक संतन रसु आई है जिउ चाखि गूंगा मुसकारै ॥२॥ *(पन्ना १३०१-०२)*

राग कानड़ा में श्री गुरु अरजन देव जी के शबदों के अर्द्धशतक के बाद श्री गुरु रामदास जी की अष्टपदियों का एक समूह छका के रूप में अंकित है। सभी अष्टपदियों का तुकांत एक ही है, जिससे आध्यात्मिक रसधारा का प्रवाह मधुर रूप से होता है। प्रथम अष्टपदी में राम-नाम जप का सामान्य निरूपण है। द्वितीय अष्टपदी में भक्त प्रहलाद और राजा जनक का सन्दर्भ है तथा तृतीय अष्टपदी में बिदर और भक्त कबीर जी का संकेत है। चतुर्थ, पंचम अष्टपदी में गुरमति के सन्दर्भ में प्रभु में लिव लगाने का भाव है :

ओअंकारि एको रवि रहिआ सभु एकस माहि समावैगो ॥
एको रूपु एको बहु रंगी सभु एकतु बचनि चलावैगो ॥४॥ *(पन्ना १३१०)*

केवल परमात्मा ही सब जगह व्याप्त है। उसी एक में सबको समा जाना है। उसका रूप एक है और बहुरंगी भी। उस एक के वचन से अब व्यवस्था नियन्त्रण में है।

हे मन! गुरमति के अनुसार आचरण करो। गुरु के अकुंश से हरि-नाम का जाप करो, जैसे मस्त हाथी अकुंश के कांट से चलता है। राम-नाम-धन हृदय के अंदर है। गुरु की शरण में इसकी उपलब्धि होती है। जब दयालु प्रभु की दया होती है तो जीव दुख-दरिद्रता से मुक्त होकर परमात्मा में लीन हो जाता है:

मन गुरमति चाल चलावैगो ॥
जिउ मैगलु मसतु दीजै तलि कुंडे अंकसु सबदु द्रिड़ावैगो ॥१॥रहाउ॥ . . .
राम नाम धनु है रिद अंतरि धनु गुर सरणाई पावैगो ॥
नानक दइआ दइआ करि दीनी दुखु दालदु भंजि समावैगो ॥ *(पन्ना १३१०-११)*

राग कानड़ा की अंतिम अष्टपदी में श्री गुरु रामदास जी ने गुरमति विचारधारा का सम्यक विवेचन किया है। प्रथम चार पदों में सतिगुरु में अनन्य निष्ठा रखकर रूपांतरण का विवेचन है। सतिगुर की शरण में आकर सेवक केवल स्वयं ही निर्मल नहीं होता उसमें दूसरों को निर्मल करने के गुण भी आ जाते हैं। पारस लोहे को सोना बनाता है, किन्तु गुरु लोहे को पारस के गुण प्रदान करता है। सतिगुरु-शरण के उत्तरोत्तर सोपान हैं, जैसे उपदेश द्वारा भक्त प्रहलाद-रक्षा, शबद ग्रहण करने से अम्बरीस को अमर पद-प्राप्ति, प्रभु-मिलन, मार्गदर्शन तथा भक्त पर निशाने साधने वाले पर उलटा प्रहार। गुरु मतानुसार चलने वाले को प्रभु गले लगा लेते हैं।

जिनके लिए गुरु ही वेद हैं, गुरु ही अक्षय ज्ञान का भंडार हैं, वे गुरु के तुष्ट होने पर हरि-नाम की आराधना करते हैं, वे हरि-जन हरि की पूजा करते हुए हरि का रूप ही हो जाते हैं :

मनु सतिगुर सरनि धिआवैगो ॥
लोहा हिरनु होवै संगि पारस गुनु पारस को होइ

आवैगो ॥१॥रहाउ॥ . . .
गुरमुखि नादु बेदु है गुरमुखि गुर परचै नामु धिआवैगो ॥
हरि हरि रूपु हरि रूपो होवै हरि जन कउ पूज करावैगो ॥२॥६॥ *(पन्ना १३११)*

राग कानड़ा में श्री गुरु रामदास जी द्वारा रचित वार में १५ पउड़ियां हैं। श्री गुरु रामदास जी की कुल आठ वारें हैं, जिनमें यह ऐसी वार है जिसमें संलग्न सभी श्लोक भी उन्हीं के रचित हैं। मुझे एक मात्र हरि से प्यार है। एक हरि ही मेरे चित्त में विराजता है। दास 'नानक' को एक मात्र प्रभु का ही आधार है, उसी से हमारी गति संभव है :

हरि इकसु सेती पिरहड़ी हरि इको मेरै चिति ॥
जन नानक इकु अधारु हरि प्रभ इकस ते गति पति ॥ *(पन्ना १३१५)*

मैं परमात्मा को बाहर देखती हूं, परमात्मा तो मेरे अंग-संग है। वह अदृश्य दीख नहीं पड़ता, गुरु के द्वारा दिखने लगता है। गुरु ने मेरे नेत्रों में ज्ञान-अंजन लगाया तो वे हरि-प्रेम में मत्त हो गए। गुरु नानक साहिब कहते हैं कि उन्हें पूर्ण अडोल अवस्था में प्रभु की प्राप्ति हो गई।

मेरी आंखें प्रेम में रत हैं, केवल हरि-नाम ही देखती हैं। यदि वे किसी और को देखें तो मैं उन्हें निकाल दूं :

हउ ढूंढेंदी सजणा सजणु मैडै नालि ॥
जन नानक अलखु न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ॥१॥ *(पन्ना १३१८)*
हरि प्रभ रते लोइणा गिआन अंजनु गुरु देइ ॥
मै प्रभु सजणु पाइआ जन नानक सहजि मिलेइ ॥१॥ *(पन्ना १३१७)*
अखी प्रेमि कसाईआ हरि हरि नामु पिखंन्हि ॥
जे करि दूजा देखदे जन नानक कढि दिचंन्हि ॥२॥ *(पन्ना १३१८)*

इस प्रकार कानड़े की वार श्री गुरु रामदास जी की प्रभु के प्रति अनन्य भक्ति का संदेश देती है। अहंकार के विष को मारकर विनम्रता धारण करो। मायापरक यत्न किसी काम नहीं आते। श्री गुरु अरजन देव जी ने राग कानड़ा में हरि-नाम के जाप पर छंद की प्रथम पंक्ति में अंकन किया है :

से उधरे जिन राम धिआए ॥
जतन माइआ के कामि न आए ॥ *(पन्ना १३१२)*

राग कानड़ा के समापन के लिए भक्त नामदेव जी का एक पावन शबद अंकित है। कानड़ा राग के भावों के अनुरूप प्रभु की व्यापकता का चित्र अंकित है। जैसे दर्पण में चेहरा दिखाई देता है उसी प्रकार हमारे हृदय में प्रभु व्याप्त है, किन्तु उसमें माया का दाग नहीं लगता :

ऐसो राम राइ अंतरजामी ॥
जैसे दरपन माहि बदन परवानी ॥१॥रहाउ॥
बसै घटा घट लीप न छीपै ॥
बंधन मुकता जातु न दीसै ॥
पानी माहि देखु मुखु जैसा ॥
नामे को सुआमी बीठलु ऐसा ॥ *(पन्ना १३१८)*

राग कानड़ा के बाद राग कलिआन की बाणी अंकित है। यह राग, राग कानड़ा का ही पूरक अथवा विस्तार है। इस राग में मुख्य बाणी श्री गुरु रामदास जी की है। राग कलिआन के आरंभ में छ: शबदों का एक समूह 'छका' शीर्षक से अंकित है। इसके बाद एक शबद कलिआन भोपाली राग में है। शबदों की भांति ही श्री गुरु रामदास जी की छ: अष्टपदियों का एक 'छका' अंकित है। राग कानड़ा की भांति सभी अष्टपदियों के तुकांत का रूप एक जैसा है। मुख्य क्रिया के साथ सहायक क्रिया 'गो' का प्रयोग नहीं है, क्रिया का सीधा प्रयोग है :

मिलावै गो = मिलीजै
चुआवै गो = चुईजै
द्रड़ावै गो = द्रड़ीजै

करावै गो = कीजै

राग कलिआन में दो शबद मन को सम्बोधित हैं। उनमें से एक शबद की पंक्ति *"मेरे मन जपु जपि जगंनाथे"* का रूप राग कानड़ा के शबद ६ *(जपि मन राम नाम जगंनाथ ॥४॥६॥छका १॥)* के अनुसार है। राग कलिआन का विनय सम्बंधी पद प्रार्थना की पावन मनोभूमि के कारण लोकप्रिय है :

हे कृपा-निधान प्रभु! दया करो कि हम आपके गुण गाते रहें। मुझे यह आशा प्रतिदिन है कि आप मुझे कब गले लगाओगे।

आप मेरे पिता हैं। मैं अनजान बालक हूं। आप समझा कर मोह-भ्रम दूर करेंगे। बेटा क्षण-क्षण भूल करता है किन्तु वह पिता का प्रिय बना रहता है।

हे पिता! जो तुम दोगे वही हम प्राप्त करेंगे। कोई दूसरा ठिकाना नहीं जहां हम जा सकते हैं।

जो भक्त हरि को अच्छे लगते हैं उन्हें ही हरि में लगन होती है, उनकी ज्योति प्रभु की ज्योति में लीन हो जाती है।

प्रभु के स्वयं कृपालु होने पर प्रभु में ध्यान एकाग्र होता है। 'नानक' प्रभु के द्वार पर प्रभु की शरण में है। शरणागत की रक्षा के लिए प्रभु को अपनी प्रतिज्ञा निभानी होगी :

प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे ॥
हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे ॥१॥रहाउ॥
हउ बारिक मुगध इआन पिता समझावहिगे ॥
सुतु खिनु खिनु भूलि बिगारि जगत पित भावहिगे ॥१॥
जो हरि सुआमी तुम देहु सोई हम पावहगे ॥
मोहि दूजी नाही ठउ जिसु पहि हम जावहगे ॥२॥
जो हरि भावहि भगत तिना हरि भावहिगे ॥
जोती जोति मिलाइ जोति रलि जावहगे ॥३॥
हरि आपे होइ क्रिपालु आपि लिव लावहिगे ॥
जनु नानकु सरनि दुआरि हरि लाज रखावहिगे ॥
(पन्ना १३२१)

राग कलिआन की अष्टपदी क्रमांक २ में राग कानड़ा की सतिगुरु-महिमा अष्टपदी क्रमांक ६ के अनुसार गुरु के गुणों का साम्य पारस से दर्शाया गया है। गुरु से स्पर्श पाकर निर्गुण भी पारस का गुण धारण कर लेगा। सतसंग प्राप्त कर राम (प्रभु) का स्मरण करो और गुरु की कृपा से हृदय में स्थित राम-रत्न प्राप्त करो :

राम गुरु पारसु परसु करीजै ॥
हम निरगुणी मनूर अति फीके मिलि सतिगुर पारसु कीजै ॥१॥रहाउ॥ . . .
सतिगुर साधसंगति है नीकी मिलि संगति रामु रवीजै ॥
अंतरि रतन जवेहर माणक गुर किरपा ते लीजै ॥ (पन्ना १३२४)

राग कलिआन में श्री गुरु अरजन देव जी के १० शबद हैं। इनमें शबद क्रमांक ७ चउपदा है जो एक-तुका है तथा अन्य सभी दुपदे होने के कारण संक्षिप्त है। अंतिम शबद में पड़ताल की भांति नादात्मक सौन्दर्य है।

हरि-चरण-सरण कल्याणकारी है। प्रभु का नाम पतित-पावन है। जो सतसंगति में निष्काम भाव से हरि-नाम-जाप करते हैं काल उनका उत्पीड़न नहीं करता। मुक्ति और मुक्ति सम्बंधी अन्य सुख भक्ति-सुख के बराबर नहीं पहुंचते। दास 'नानक' का चित्त प्रभु-दर्शन का लोभी है। उसे जन्म-मरण के कारण दोबारा जन्म लेने के बंधनों का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा :

हरि चरन सरन कलिआन करन ॥
प्रभ नामु पतित पावनो ॥१॥रहाउ॥
साधसंगि जपि निसंग जमकालु तिसु न खावनो ॥१॥
मुकति जुगति अनिक सूख हरि भगति लवै न लावनो ॥
प्रभ दरस लुबध दास नानक बहुड़ि जोनि न धावनो ॥२॥ (पन्ना १३२३)

गुरबाणी चिंतनधारा : ४१

रहरासि साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

ऐ मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तूं मन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥

गुरु पातशाह इस पउड़ी में मन को प्रबोधित करते हुए पावन संदेश देते हैं कि हे मेरे मन! तू सदैव (स्थिर) ईश्वर के चरणों में लीन रह, तेरा प्रभु से हमेशा जुड़ाव बना रहे। मेरे मन! तू सदैव प्रभु की सिफत-सलाह रूपी यादों को हृदय-घर में पिरो कर रख, क्योंकि वह प्रभु ही सारे दुख दूर करने वाला है, वह प्रभु ही तेरी सहायता करेगा, हमेशा तेरा मददगार बन कर तेरे सारे कार्य संवारेगा अर्थात् उसी मालिक की सहायता से तेरे सभी कार्य सहजता से सम्पूर्ण हो जायेंगे।

सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥
कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

वह परमेश्वर जो सब कुछ करने में समर्थ है, उसे क्यों मन से विस्मृत करता है अर्थात् तू प्रभु को क्यों मन से भुलाता है? तीसरे पातशाह फरमान करते हैं कि हे मेरे मन! तू हमेशा प्रभु-चरणों से प्रीत जोड़ कर रख, श्वास-श्वास उसका सिमरन कर, उस प्रभु को पल भर के लिए भी मन से मत भुला।

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥
घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥
सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥

हे सदैव कायम रहने वाले प्रभु! सत्य स्वरूप मालिक! तेरे घर में किस चीज की कमी है? अर्थात् लोक-परलोक की कोई ऐसी वस्तु नहीं, कोई ऐसा सुख नहीं, कोई ऐसा आनंद नहीं जो तेरे दर से न प्राप्त हो! वस्तुतः प्रभु के दर पर सब कुछ विद्यमान है। बेशक, सब कुछ तेरे घर में मौजूद है, लेकिन प्राप्त वही कर सकता है जिसे तू स्वयं प्रदान करता है। जिस पर तेरी रहमत होती है वही तेरी स्तुति करने में समर्थ होता है। तेरी ही कृपा से तेरा यशोगान करते हुए जो जीव तेरा पावन नाम हृदय में बसाता है, वह हृदय-घर सदैव आनंदित रहता है।

नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥
कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

जिन जीवों ने तेरा नाम मन में बसाया है उनके अंदर मानो अनेकों वाद्य-यंत्रों की मिली-जुली स्वर-लहरियां एक साथ बज उठती हैं। अतः हृदय-घर में वैसी ही खुशी तथा उमंग पैदा हो जाती है जैसे कि अनेक वाद्य-यंत्रों के बजने से उत्पन्न मधुर संगीत से मन रूपी कमल खिल उठता है।

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी पावन फरमान करते हैं, हे सदैव कायम रहने वाले प्रभु! तेरे घर में किसी भी चीज की कोई कमी नहीं है, (पर) मैं तेरे दर से आनंद की बख्शिश (दान) मांगता हूं।

साचा नामु मेरा आधारो ॥
साचु नामु अधारु मेरा

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर। मो: ०९३१४६-०९२९३*

जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥
करि सांति सुख मनि आइ वसिआ
जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥

गुरु पातशाह उस परमेश्वर का शुक्राना करते हुए पावन फरमान करते हैं कि ईश्वर की रहमत के फलस्वरूप उसका हमेशा कायम रहने वाला 'नाम' मेरे जीवन का आधार (आसरा) बन गया है। जिस हरि-नाम ने मेरे सारे लोभ-लालच मिटा दिये हैं, जिस प्रभु-नाम ने मेरी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण कर दी हैं, जो हरि-नाम मेरे अंदर शांति तथा सुख पैदा करके मेरे हृदय-घर में आकर बस गया है वही अटल रहने वाला प्रभु-नाम ही मेरा जीवनाधार है।

वस्तुतः प्रभु-नाम के बिना दुनियावी इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं और मन में हमेशा भटकना, बैचेनी बनी रहती है। सिमरन की बदौलत ही मन की सभी मुरादें पूर्ण हो सकती हैं, जैसा कि पंचम पातशाह सुखमनी साहिब में फरमान करते हैं :

प्रभ का सिमरनु सब ते ऊचा ॥
प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥
प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥
प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥
प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ (पन्ना २६३)
सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु
जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥
कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥
साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

मैं स्वयं को सतिगुरु से कुर्बान करता हूं, क्योंकि ये समस्त रहमतें गुरु से ही प्राप्त हुई हैं। तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का पावन फरमान है कि हे संत-जनो! गुरु का शबद एकाग्रचित्त होकर सुनो, गुरु-शबद से प्यार बनाओ। सतिगुरु की कृपा से ही प्रभु का सदा कायम रहने वाला नाम (धन) मेरे जीवन का सहारा बना है।

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥
घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥
पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥

जिस हृदय रूपी घर में हे मालिक! तूने सत्ता (ज्योति) टिकाई है, उस भाग्यशाली हृदय में मानो पांच प्रकाश के वाद्य-यंत्रों की मिली-जुली सुरें बज रही हैं अर्थात् उस हृदय में आनंद की अवस्था बनी रहती है। हे प्रभु! उसके विकार रूपी वैरी तू वश में कर देता है और भयावह मौत का भय भी तू दूर कर देता है।

वस्तुतः उस भाग्यशाली के हृदय-घर में अनहद बाजे बजते हैं जिसमें उस अकाल पुरख ने रहमत करके अपने नाम की सत्ता (ताकत) टिका दी हो। उस जीव की आत्मिक पूंजी को ग्रसने वाले पांचों विकार (काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार) वश में कर दिये अर्थात् ये पांचों विकार ऐसे जीव पर अपना प्रभाव नहीं डाल सकते अपितु उसके दास बन कर रहते हैं। यही नहीं, जिस जीव पर तेरी रहमत है उसे मौत के दुखदायी भय से भी मुक्त कर दिया।

धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥
कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

हे वाहिगुरु! जिस जीव की तकदीर आप जी दरगाह से ही संवार देते हो अर्थात् आपकी रहमत से जिसकी तकदीर अथवा भाग्य में नाम-सिमरन का लेख लिख दिया जाता है तीसरे पातशाह फरमान करते हैं कि उस हृदय-घर में सुख पैदा होता है, उस हृदय रूपी घर में सदैव

अनहद नाद (एकरस बाजे) बजते हैं।

वास्तव में इन पांच विकारों से बचना मनुष्य के लिए कोई सहज कार्य नहीं है, जैसा कि पावन बाणी में समझाया गया है कि जीव बेचारे की इनके आगे कोई पेश नहीं जाती है:

अवरि पंच हम एक जना किउ राखउ घर बारु मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किसु आगै करी पुकार जना ॥ (पन्ना १५५)

क्योंकि इस मन को विकारों की जन्म-जन्मांतरों की मैल लगी हुई है। पावन बाणी के अनुसार :

जनम जनम की इसु मन कउ मलु लागी काला होआ सिआहु ॥ (पन्ना ६५१)

इस विकारों की मैल को केवल नाम रूपी साबुन से ही धोया जा सकता है, यथा बाणी का फरमान है :

भरीऐ मति पापा कै संगि ॥
ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ (पन्ना ४)
अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥

अनंद साहिब की अंतिम पउड़ी में श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि प्रभु के गुणगान से, अलाही बाणी के श्रवण से समस्त दुख, क्लेश, संताप आदि मिट जाते हैं। जो संत-जन पूरे गुरु द्वारा सिफ्त-सलाह की बाणी के साथ अपने आप को लीन कर लेते हैं उनका हृदय रूपी कमल हमेशा खिला रहता है अर्थात् उस हृदय में सदैव आनंद के निर्झर बहते हैं।

दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥
संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥
सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥
बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥

इस पावन बाणी को सुनने वाले तथा गायन करने वाले पवित्रतम् आत्मा वाले हो जाते हैं। इस अलाही बाणी में ही उन्हें सतिगुरु के दर्शन-दीदार होते हैं। तीसरे पातशाह कथन करते हैं कि जो इंसान गुरु-चरणों में लगते हैं (अपने आप को गुरु-चरणों में समर्पित कर देते हैं) उनके अंत:करण में एकरस आनंद (खुशी) के बाजे बजते रहते हैं, उनके अंदर आत्मिक आनंद पैदा हो जाता है।

जिस किसी पर अकाल पुरख की अपार कृपा होती है उसे पूर्ण गुरु मिल जाता है और जिस पर पूर्ण गुरु की कृपा-दृष्टि होती है वह गुरमति का धारणी होकर अपने जीवन-मनोरथ में सफल हो जाता है। ऐसे जीव विकारों से पूर्ण मुक्त होकर सदैव आनंद की अवस्था में रहते हैं, जैसा कि श्री गुरु रामदास जी का पावन फरमान है :

गुरमति पंच दूत वसि आवहि मनि तनि हरि ओमाहा राम ॥ (पन्ना ६९९)

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥
अंम्रित नामु ठाकुर का पाइओ जिस का सभसु अधारो ॥

'मुंदावणी' शीर्षक से रचित पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का पावन शबद एक विलक्षण तथ्य को उजागर करता है। हे भाई! इस पावन ग्रंथ रूपी थाल में मानो ईश्वर द्वारा तीन अनमोल वस्तुएं डाली गई हैं :

१. सतु- सत्य अर्थात् सत्याचरण

२. संतोखु- संतोष अर्थात् जो ईश्वर ने दिया है उसी में राजी रहना

३. वीचारो- नीर-क्षीर विवेकी बुद्धि अर्थात् आत्मिक जीवन की सूझ।

इस पावन ग्रंथ की आलौकिक बाणी में

सत्य, संतोष तथा चिंतन का संकलन है। इसमें आत्मिक जीवन देने वाला नाम डाला गया है, जिसका आधार अथवा आश्रय प्रत्येक जीव के लिए आवश्यक है। अतः इस आत्मिक जीवन के सहारे ही यह जीवन सही दिशा में चलता है।

जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥
एहु वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥

इस आत्मिक भोजन (खुराक) को अगर कोई जीव (हमेशा) खाता रहे तथा आनंद सहित भोगता रहे, तो वह मनुष्य विकारों से निर्लेप रहेगा अर्थात् विकारों से बचा रहेगा। हे भाई! यदि आत्मिक उद्धार की आवश्यकता है तो आत्मिक आनंद प्रदान करने वाली यह 'नाम' रूपी अनमोल वस्तु (रत्न) त्यागने योग्य नहीं है अर्थात् इस अनमोल रत्न को त्यागा नहीं जा सकता। इसे सदैव हृदय में संभाल कर रखो।

तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

निष्कर्षतः 'मुंदावणी' शीर्षक में जीवन का गूढ़ रहस्य समझाया है। पंचम पातशाह स्पष्ट करते हैं कि जो कोई भी इस अमृतमयी प्रभु-नाम को हृदय में बसा लेगा, इस अमृत रूपी भोजन को खाकर पचा लेगा अर्थात् अलाही बाणी को पढ़-सुनकर अमल करेगा, उसका उद्धार होगा।

एहु वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥

अर्थात् सतु, संतोख और विचार एवं ईश्वर का आनंदमयी नाम इन शुभ गुणों को हृदय में धारण करना ही समूची मानवता के कल्याण का मार्ग है, क्योंकि यह सारा संसार 'मोह और माया' के अंधेरे में ठोकरें खा रहा है, अतः इस दलदल से निकलने हेतु गुरु-शबद के प्रकाश से उस पारब्रह्म निराकार का नूर सर्वत्र दिखाई देगा और जीव का जीवन धन्य हो जायेगा।

पंचम पातशाह जी पावन उपदेश देते हुए कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करते हैं कि इस नाम के द्वारा प्रभु-चरणों से जुड़ कर (चित्त को प्रभु-चरणों में लगाकर) ही घोर अंधकारमयी संसार-समुद्र को पार किया जा सकता है और इस तरह परमेश्वर का प्रकाश सर्वत्र दिखाई देने लगता है। गुरबाणी में 'सतु' शब्द दान के गुणों हेतु प्रयोग किया गया है, यथा :

सतीआ मनि संतोखु उपजै देणै कै वीचारि ॥
(पन्ना ४६६)

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी ने ईश्वरीय भोजन के थाल का जिक्र किया है, यथा:

थालै विचि तै वसतू पईओ हरि भोजनु अम्रितु सारु ॥
जितु खाधै मनु त्रिपतीऐ पाईऐ मोख दुआरु ॥
इहु भोजनु अलभु है संतहु लभै गुर वीचारि ॥
एह मुदावणी किउ विचहु कढीऐ सदा रखीऐ उरि धारि ॥
एह मुदावणी सतिगुरू पाई गुरसिखा लधी भालि ॥
नानक जिसु बुझाए सु बुझसी हरि पाइआ गुरमुखि घालि ॥ (पन्ना ६४५)

तीसरे पातशाह के चिन्तनानुसार एक थाल है, उसमें तीन पदार्थ परोसे गए हैं जो ईश्वरीय भोजन अर्थात् रूहानी खुराक है, जिसे खाने से मन (आत्मा) को तृप्ति मिलती है तथा मोक्ष-द्वार की प्राप्ति होती है। ये तीनों पदार्थ गुप्त हैं। गुरु द्वारा दर्शाए मार्ग पर चलने से ही इसकी प्राप्ति संभव है। वस्तुतः जिस पर अकाल पुरख की रहमत होती है उसे ही पूर्ण गुरु द्वारा यह गूढ़ रहस्य समझ आता है।

गुर की बाणी गुर ते जाती जि सबदि रते रंगु लाइ ॥

पवितु पावन से जन निरमल हरि कै नामि समाइ ॥ *(पन्ना १३४६)*

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥
मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥

पंचम पातशाह जी की अति नम्रता-भाव में पावन बेनती, हे परवरदिगार! मैं तेरे किये उपकारों की कद्र नहीं जान सकता। उपकार की दात संभालने हेतु तूने कृपा करके मुझे स्वयं ही उपयुक्त पात्र बनाया है। मैं निर्गुण हूं अर्थात् मेरे में तो कोई भी गुण नहीं है। तूने ही मुझ पर तरस खाकर मुझे इस योग्य बना दिया है।

तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥
नानक नामु मिलै तां जीवां तनु मनु थीवै हरिआ ॥

हे प्रभु! मेरे पर तेरी अपार बख्शिश हुई जिसके फलस्वरूप मुझे सज्जन पुरुष अर्थात् सतिगुरु की प्राप्ति हुई।

श्री गुरु अरजन देव जी बेनती करते हैं कि हे दातार प्रभु! मुझे सदैव आपका अमृतमयी नाम प्राप्त होता रहे जिसके सहारे मेरा आत्मिक जीवन बना रहे! मेरा तन-मन सदैव प्रफुल्लित रहे अर्थात् तेरे नाम की बरकत से हमेशा खिला रहे!

"तेरा कीता जातो नाही" पंचम पातशाह द्वारा उच्चारित बेनती भरा शबद है जो 'रहरासि साहिब' में अंतिम श्लोक होने के साथ-साथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना की सम्पूर्णता पर गुरदेव की ओर से उस अकाल पुरख का विनम्रता सहित कोटिश-कोटिश शुक्राना किया गया है। विनम्रता के पुंज श्री गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह ने कलयुगी जीवों को इस 'बेनती', 'प्रार्थना' और 'शुक्राने' से एक विलक्षण दिशा दी है कि प्रत्येक कार्य हेतु उस परमेश्वर को मानकर, गुरु-कृपा से अपने कर्त्ता भाव को मिटा कर किस प्रकार उस परमेश्वर का तहे दिल से धन्यवाद करना है कि वह प्रभु जीव की झोली और भी रहमतों से भर दें।

इतनी समर्थता के मालिक होते हुए, इतने महान कार्य "श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना" विलक्षण कार्य की सम्पूर्णता पर निराकार/अकाल पुरख/वाहिगुरु जी के चरणों में स्वयं को गुणों से रहित तुच्छ मानते हुए अरदास बेनती करते हुए पावन शबद का उच्चारण करते हैं कि हे वाहिगुरु! मेरे में तो कोई गुण नहीं था, तूने ही तरस खाकर मुझे इसके लिए योग्य पात्र बना कर जो परोपकार किया है उसे बयान नहीं किया जा सकता। इसमें गुरु पातशाह की अनुपम विनम्रता के दीदार होते हैं और समूची मानवता को एक विलक्षण दिशा-निर्देश मिलता है कि किस प्रकार गुणों के होते हुए भी विनम्रता के धारणी होकर सदैव उस परमेश्वर, जो सर्वगुण सम्पन्न है, सम्पूर्ण सामर्थ्य एवं ताकतों का मालिक है, उसके चरणों में अरदास बेनती करके, नाम-सिमरन की याचना करके अपने जीवन को आनंदमयी बनाना है, क्योंकि किसी भी गुण का अहंकार नहीं करना यही पावन बाणी का संदेश है :

मति होदी होइ इआणा ॥
ताण होदे होइ निताणा ॥ *(पन्ना १३८४)*

वास्तव में ऐसा परोपकारी एवं विनम्र हृदय ही सरबत्त के भले की कामना कर सकता है, यथा :

नानक नाम चढ़दी कला ॥
तेरे भाणे सरबत्त दा भला ॥



गुरु-गाथा : १९

सच्चा सौदा

*-डॉ अमृत कौर**

श्री गुरु नानक देव जी दिन-रात प्रभु-भक्ति में लीन रहते। लौकिक कार्यों में उनकी कोई विशेष रुचि नहीं थी। उनके पिता श्री कालू जी को चिन्ता हुई कि ये जवान हो रहे हैं, कल को इनकी शादी भी करनी है, परिवार का उत्तरदायित्व संभालना है; यदि कोई काम-धंधा नहीं करेंगे तो कल को परिवार का भरण-पोषण कैसे करेंगे! कोई छोटी-मोटी दुकान खोल कर कारोबार तो शुरू कराना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए पिता श्री कालू जी ने श्री गुरु नानक देव जी को प्रेरित किया। उन्हें बीस रुपये देते हुए कहा, "जाओ बेटा! सौदा खरीद कर लाओ। फायदेमंद सामान लेकर आना। एक-एक पैसे का सही उपयोग करना।"

गुरु जी चल पड़े, क्योंकि वे पिता की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहते थे। वे थोड़ी दूर ही पहुंचे थे कि उनको भूखे साधुओं की एक मंडली मिली। साधु कई दिनों की तीर्थ-यात्रा के कारण थके हुए थे और भूख से निढाल। कृपालु गुरु जी से उनकी भूख से निढाल अवस्था देखी न गई। उन्होंने उन भूखे साधुओं से कहा, "आप लोग यहां थोड़ी प्रतीक्षा करो, मैं आपके लिए खाने का सामान लेकर आता हूं।" गुरु जी शहर गए और लंगर बनाने का सामान खरीद लाए। साधुओं ने जंगल से लकड़ी इकट्ठी की, आग जलाई और खाना तैयार किया। फिर सब ने एक पंगत में मिल-बैठ कर भोजन ग्रहण किया। यह सहभोज गुरु जी की लंगर-प्रथा की स्थापना थी, साधसंगत थी, जिसमें बिना भेदभाव के प्रभु का नाम-सिमरन करते हुए एक ही पंगत में बैठकर लंगर ग्रहण करना था; अपने हाथों से लंगर बनाना और खाना था, सांझीवालता का संदेश देना था, भूखे को भोजन प्रदान करना था। यह सेवा का संकल्प था जो अब तक चला आ रहा है। भूखों को लंगर छकाना सच्ची सेवा है, सच्ची बंदगी है :

घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)

परंतु जब गुरु जी बिना किसी 'सौदे' के घर खाली हाथ लौटे तो पिता श्री कालू जी ने प्रश्न किया, "सौदा कहां है?" गुरु जी ने उत्तर दिया, "मैं सच्चा सौदा कर आया हूं।" "यह सच्चा सौदा क्या होता है?" पिता ने प्रश्न किया। गुरु जी ने उत्तर दिया, "पिता जी! मुझे रास्ते में भूखे साधुओं की एक मंडली मिली, जो तीर्थ-यात्रा से आ रही थी और भूख से निढाल थी। आपके दिए पैसों से रसद खरीद कर लंगर बनाया और उनको छका दिया। यही मेरा सच्चा सौदा है।" "धन के नाश करने को 'सच्चा सौदा' बता रहे हो?" क्रोधित हो पिता श्री कालू जी ने ज्यों ही श्री गुरु नानक देव जी को मारने के लिए हाथ उठाया, बहन नानकी ने बीच में आकर प्यारे वीर का बचाव किया। वे श्री गुरु नानक देव जी को असीम प्यार करती थीं। उन्होंने कहा, "मेरे वीर नूं चपेड़

**१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०३*

न मारीं बाबला! एह तां कोई रब्बी अवतार ए। पिता जी! मेरा वीर कोई साधारण पुरख नहीं, एह तां प्रभु दा भेजिआ होइआ मसीहा ए। इसदे कम्म निराले ने। इसदे कम्म करन दे ढंग निराले ने। एह तां संसार दा उद्धार करन आइआ ए। भुक्खिआं दी भुक्ख मिटाण आइआ ए। इसने सारी मानवता नूं जीवन-दान देणा ए। इसदा इह 'सौदा' सचमुच 'सच्चा सौदा' ए। इही इसदी बंदगी ए, इही इसदी पूजा ए।" पिता श्री कालू जी को बेबे नानकी की अनुनय-विनय समझ में आ गई और उन्होंने श्री गुरु नानक देव जी को कस कर गले से लगा लिया। पुत्र-गुरु को गले से लगाते ही उन्हें असीम आनंद और शांति की अनुभूति हुई। उन्हें लगा, उनकी कमाई सचमुच सफल हो गई है।





बुजुर्ग देश की रीढ़ हैं!

आपके द्वारा प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' को कई बार देखने और पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक बार इसकी सामग्री अत्यंत ज्ञानवर्द्धक और रोचक होती है, परन्तु नवंबर माह की पत्रिका "बुजुर्ग श्रेणी विशेषांक" जब देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो इसका शीर्षक देखकर ही इसको पढ़ने की काफी उत्सुकता हुई और यह जानने की जिज्ञासा हुई कि आखिर इस पत्रिका में समाज के इस अनछुए पहलू और उपेक्षित वर्ग के बारे में क्या लिखा गया है। मैंने इसमें दिये प्रत्येक लेख को बहुत ध्यान से पढ़ा। इसमें दी गयी लेख सामग्री इतनी रोचक और ज्ञानवर्द्धक है कि इसे बार-बार पढ़ने की इच्छा उत्पन्न होती है। इसके लिए आप और लेखकगण प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने अपने विचारों द्वारा समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। आप ने समाज के इस अनछुए पहलू और उपेक्षित वर्ग की इतना गहरे जाकर उसकी नब्ज छूने का जो प्रयास किया है वह वास्तव में अत्यंत सराहनीय है और उसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। आज तक मैंने जितनी भी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ी हैं ऐसी पत्रिका मैंने न देखी है और न ही पढ़ी है जिसमें समाज के इस उपेक्षित वर्ग को इतनी महत्ता दी गयी हो। इसलिए इसको अगर एक आदर्श पत्रिका की संज्ञा दी जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि यह सर्वधर्म और सर्वग्राह्य है। मैं तो इसे देखकर और पढ़कर अति प्रसन्न हुआ। इसी तरह भविष्य में भी बालक, स्त्री, शहीद और भक्त विशेषांक के रूप में भी इस पत्रिका को प्रकाशित किया जाये तो इससे समाज, प्रांत और देश को एक नई दिशा मिलेगी।

मेरा विचार है कि यह पत्रिका यदि प्रत्येक घर में पहुंचायी जाये तो समाज को एक सही दिशा मिल सकती है और हमारे बच्चे-बच्चियां या परिवार का कोई भी सदस्य इसे पढ़कर (व्यक्तिगत जीवन की बात छोड़ दी जाये) समाज, प्रांत और देश को भी खुशहाल बना सकता है, क्योंकि बच्चे देश का भविष्य हैं और बुजुर्ग देश की रीढ़ हैं।

मेरा आपसे अनुरोध है कि यदि संभव हो सके तो प्रत्येक राज्य के केंद्रीय विद्यालयों, विश्वविद्यालयों तथा विधान मंडलों के पुस्तकालयों में इसकी एक-एक प्रति अवश्य भेजी जाये। यह समाज, प्रांत और देश की सबसे बड़ी सेवा होगी, क्योंकि सिक्ख धर्म का उद्देश्य ही सरबत्त का भला है और इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु हम रोज ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

-जगजीत सिंघ
(सेवानिवृत्त उप सचिव, बिहार विधान परिषद)
लुधियाना।



दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-३०

प्रतिभाशाली विद्वान - कवि भाई मदन सिंघ

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल**

जाति-विभाजन व्यवस्था भारत की सबसे बड़ी सामाजिक बुराई रही है। देश की स्वाभाविक उन्नति में जितना व्यवधान इस व्यवस्था ने डाला, उतना किसी और बुराई ने नहीं। वास्तव में यह खुद अन्य कई सामाजिक बुराइयों की जड़ है। प्राचीन और मध्यकालीन समाज इससे बुरी तरह ग्रस्त था। मानवता के अलंबरदार गुरु साहिबान ने जाति-व्यवस्था को समूल नष्ट करने के लिए एक व्यापक सामाजिक आंदोलन चलाया। इसी लिए गुरमति में जाति-प्रथा का सैद्धांतिक ही नहीं, व्यवहारिक विरोध एवं खंडन भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। गुरु साहिबान ने सांझे गुरुद्वारा साहिबान, सांझे सरोवरों एवं लंगर-पंगत-संगत आदि प्रथाओं के द्वारा जाति-प्रथा को समाप्त करने के बड़े सफल प्रयत्न किये।

यही कारण है कि सिक्ख परंपरा में ऐसे अनेक व्यक्तित्व हुए हैं जिनका संबंध तथाकथित निम्न समझी जाने वाली श्रेणियों से होने के बावजूद उन्हें सिक्ख इतिहास और परंपरा में अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त हुआ। वास्तव में सिक्ख धर्म का उदय ही दलित-शोषित मानवता की रक्षा के लिए हुआ था।

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दरबार में कोई भी व्यक्ति बिना किसी भेदभाव के उच्च से उच्च स्थान प्राप्त कर सकता था। दशमेश पिता के दरबारी कवियों में से कुछ कवि तथाकथित निम्न श्रेणियों से संबंधित थे, परन्तु उनकी प्रतिभा, उनके कौशल एवं उनकी विद्वता को समान रूप से पूर्ण सम्मान प्राप्त था।

कवि भाई मदन सिंघ दशमेश पिता के दरबारी कवियों में शामिल एक ऐसे विद्वान कवि थे जिनका संबंध तथाकथित निम्न श्रेणी से था। परंतु आप दरबार में अन्य विद्वानों की तरह सम्माननीय एवं गुरु जी के प्रिय थे।

सिक्ख ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार कवि भाई मदन सिंघ जब दशमेश जी की शरण में आये तो उन्होंने सबसे पहले घोड़ों की देख-रेख की सेवा संभाली। गुरु जी के प्रिय घोड़े 'दल-विदार' की देखभाल आप ही किया करते थे।

दशमेश पिता के दरबार में विद्वानों एवं कवियों की एक बड़ी उपस्थिति हर समय रहती थी। काव्य-रचना, चिंतन-मनन, अनुवाद-कार्य जैसी बौद्धिक गतिविधियां सदैव चलती रहतीं। इन गतिविधियों ने भाई मदन सिंघ को भी प्रेरित किया और वे भी कविता रचने लगे। यह इनकी प्रतिभा और साधना का ही फल था कि इन्हें दशमेश पिता के बावन दरबारी कवियों में स्थान मिला।

जैसा कि कवि भाई मदन सिंघ के नाम से ही स्पष्ट है, आप ने खालसा-सिरजना के वक्त श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी से 'अमृत' छका और 'सिंघ' सज गये। कवि भाई मदन सिंघ एक प्रतिभाशाली कवि और समर्पित सिक्ख के रूप में सदैव अमर रहेंगे।



**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना) पंजाब। मो: ०९४१७२-७६२७१*



मलेशिया में गुरुद्वारा साहिब की इमारत को नुकसान पहुंचाए जाने की घटना दुखदायी

अमृतसर : १४ जनवरी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर में गुरुद्वारा साहिब की इमारत को नुकसान पहुंचाए जाने की घटना का सख्त नोटिस लेते हुए इसकी जोरदार शब्दों में निंदा की है।

उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थान सब धर्मों के सांझे होते हैं तथा भाईचारक सद्भावना बनाए रखने के लिए सब धर्मों के धार्मिक स्थानों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि अकाल पुरख की आराधना के लिए स्थापित किए गए धार्मिक स्थान जहां मानवी मन को रूहानी शांति प्रदान करते हैं वहां इससे मानवी भाईचारे में आपसी प्रेम-प्यार तथा परस्पर सांझ भी मजबूत होती है, जबकि किसी भी धर्म के धार्मिक स्थान की तोड़फोड़ की घटनाएं मानवी भाईचारे में घृणा पैदा करती हैं। उन्होंने कहा कि मलेशिया सरकार को इस घटना की जांच कर दोषियों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्यवाही करनी चाहिए।

आर. एस. एस. सिक्खों के धार्मिक मसलों में हस्तक्षेप की क्षमा-याचना करे : जत्थेदार अवतार सिंघ

अमृतसर : २३ जनवरी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने आर. एस. एस. की वेबसाईट पर की गई सिक्ख धर्म विरोधी टिप्पणियों का सख्त नोटिस लेते हुए कहा है कि सिक्ख एक अलग कौम है जिसकी विलक्षण पहचान एवं शानदार इतिहास है। आर. एस. एस. द्वारा की गई ऐसी टिप्पणियां सिक्ख धर्म में सीधा हस्तक्षेप तथा सिक्खों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने के तुल्य है, जिससे सिक्ख संगत में भारी रोष एवं आक्रोष पाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आर. एस. एस. इस गलती की सिक्ख जगत से तुरंत क्षमा-याचना करे ताकि सिक्खों के हृदय शांत हो सकें।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि वेबसाईट के अनुसार लंगर में प्याज तथा लहसुन के इस्तेमाल, केंद्रीय सिक्ख अजायबघर में सुशोभित कौमी जरनैलों, महापुरुषों एवं भक्त साहिबान की तस्वीरों तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज भक्त साहिबान की बाणी पर 'किंतु' करना सिक्ख धर्म में सीधा हस्तक्षेप है जो कभी भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि लंगर में प्याज तथा लहसुन का इस्तेमाल या अजायबघर में तस्वीरें लगाना/न लगाना सिक्ख कौम का आंतरिक एवं धार्मिक मसला है। उन्होंने कहा कि गुरबाणी में दर्ज 'राम' या 'गोबिंद' नाम किसी हिंदू देवी-देवते के नाम के रूप में नहीं उच्चारण किए गए बल्कि यह तो

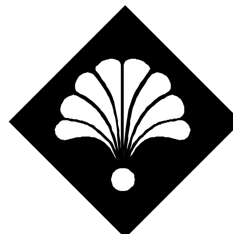
अकाल पुरख को अलग-अलग नामों से संबोधित किया गया है, इसलिए आर. एस. एस. को अपने मन में से ऐसा भ्रम निकाल देना चाहिए। उन्होंने कहा कि सिक्ख गुरु साहिबान द्वारा हिंदू धर्म के लिए समय-समय की गई महान कुर्बानियों के आगे सिर झुकाते हुए आर. एस. एस. द्वारा सिक्ख धर्म विरोधी ऐसी सामग्री को तुरंत अपनी वेबसाईट से हटा कर सिक्ख-जगत से क्षमा-याचना की जाए।

सिक्ख इतिहास की खोज के लिए गुरबाणी तथा सिक्ख रिवायतों का ज्ञान होना अति जरूरी : डॉ. किरपाल सिंघ

अमृतसर : २५ जनवरी। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा कलगीधर निवास, सेक्टर २७-बी, चंडीगढ़ में स्थापित 'सिक्ख स्रोत ऐतिहासिक ग्रंथ संपादना प्रोजेक्ट' द्वारा रीसर्च स्कालरों के मार्गनिर्देशन तथा शिक्षण हेतु शुरू की गई लेक्चर-शृंखला के पांचवें समारोह को संबोधित करते हुए प्रोजेक्ट इंचार्ज डॉ. किरपाल सिंघ ने बताया कि सिक्ख इतिहास की खोज के लिए गुरबाणी का ज्ञाता तथा सिक्ख रिवायतों का जानकार होना अति जरूरी है। बृज भाषा, प्राचीन गुरमुखी, फारसी का ज्ञान भी होना चाहिए। सिक्ख इतिहास में भट्ट बहियों, पंडा बहियों की विशेष भूमिका है, लेकिन निर्णय करने की योग्यता होनी चाहिए।

मुख्य प्रवक्ता प्रो. प्रिथीपाल सिंघ ने कहा कि इतिहास लिखते समय प्राचीन समय के हालात को जानना अति आवश्यक है। धार्मिक सिद्धांत तथा सिक्ख इतिहास साथ-साथ चलते हैं। सिक्ख इतिहास में गुरबाणी तथा गुरु-सिद्धांत ही ऐतिहासिक तथ्य पेश करते हैं। यही कारण है कि 'पुरातन जनम साखी' ज्यादा प्रमाणिक है। बृज तथा फारसी स्रोत होने के कारण सिक्ख इतिहासकारी की पेशकारी करने में मुश्किल बनी रही। डॉ. इंदू बंगा ने कहा कि सिक्ख धर्म अन्य धर्मों को समझने में मददगार साबित होता है तथा सिक्ख धर्म सर्वपक्षीय व मानवता के भले के लिए है। डॉ. अशोक सिंघ बागड़ीआं ने कहा कि गुरु साहिबान की ज्योति भी एक है तथा मिशन भी एक है। पंथ, श्री गुरु ग्रंथ साहिब का व्यवहारिक स्तर पर विस्तार है।

अध्यक्षता भाषण में डॉ. जे. एस. (गरेवाल) ने कहा कि गुरु-इतिहास लिखते समय गुरु साहिबान के मिशन, फिलासफी तथा उनके सिद्धांत का वर्णन करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि गुरु साहिबान ने अपने मिशन का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बाखूबी वर्णन किया है। सिक्ख धर्म की विशेषता परोपकार करना है। बीबी बलजीत कौर रीसर्च स्कालर ने सभा में आए विद्वानों, रीसर्च स्कालरों तथा अन्य बुद्धिजीवियों का धन्यवाद किया। स्टेज-संचालन स. चमकौर सिंघ रीसर्च स्कालर ने किया। 



ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
सिक्ख रहित मर्यादा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की रहु-रीत सब-कमेटी द्वारा रहु-रीत के खरड़े की प्रवानगी 'सर्व हिंद सिक्ख मिशन बोर्ड' ने अपने प्रस्ताव नं. १, दिनांक १. ८. ३६ द्वारा तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने प्रस्ताव नं. १४९, दिनांक १२. १०. ३६ द्वारा दी तथा फिर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 'धार्मिक सलाहकार कमेटी' ने अपनी एकत्रता तिथि ७. १. ४५ में इसको विचार कर इसमें कुछ बढ़ोत्तरी-कमी करने की सिफारिश की। धार्मिक सलाहकार कमेटी की इस एकत्रता में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे—

(१) सिंघ साहिब जत्थेदार मोहन सिंघ जी, जत्थेदार, श्री अकाल तख्त साहिब।
(२) भाई साहिब भाई अच्छर सिंघ जी, हैड ग्रंथी, श्री दरबार साहिब, अमृतसर।
(३) प्रो: तेजा सिंघ जी एम. ए, खालसा कॉलेज, अमृतसर।
(४) प्रो: गंगा सिंघ जी, प्रिंसीपल शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, अमृतसर।
(५) ज्ञानी लाल सिंघ जी एम. ए, प्रोफेसर, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, अमृतसर।
(६) प्रो: शेर सिंघ जी एम. एस. सी, गवर्नमेंट कॉलेज, लुधियाना।
(७) बावा प्रेम सिंघ जी होती (प्रसिद्ध हिस्टोरियन)।
(८) ज्ञानी बादल सिंघ जी, इंचार्ज सिक्ख मिशन, हापुड़।

धार्मिक सलाहकार कमेटी की सिफारिश अनुसार इसमें बढ़ाने-घटाने की प्रवानगी शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपनी एकत्रता दिनांक ३. २. ४५ के प्रस्ताव नं. ९७ द्वारा दी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अगले पृष्ठों पर जो रहित मर्यादा दी गई है, वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 'रहु-रीत कमेटी' द्वारा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के दफ्तर में जिस रिपोर्ट सहित पहुंची थी, वह नीचे दी जाती है :-

रिपोर्ट 'रहु-रीत सब-कमेटी'
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)

सेवा में,
श्रीमान सचिव साहिब,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर।

श्रीमान जी,

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारों में गुर-मर्यादा को ठीक तरह नियत करने हेतु,

रहित मर्यादा का एक खरड़ा तैयार करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की सब-कमेटी बनायी थी:-

(१) ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, अमृतसर।
(२) ज्ञानी शेर सिंघ जी।
(३) भाई बुद्ध सिंघ जी।
(४) अकाली कौर सिंघ जी।
(५) संत संगत सिंघ जी, कमालीआ।
(६) भाई कान्ह सिंघ जी, नाभा।
(७) संत गुलाब सिंघ जी, घोलीआं।
(८) भाई लाभ सिंघ जी, ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब।
(९) भाई हज़ूरा सिंघ जी, श्री हज़ूर साहिब (या उनका भेजा हुआ कोई प्रतिनिधि)
(१०) पंडित बसंत सिंघ जी, पटियाला।
(११) भाई वीर सिंघ जी, अमृतसर।
(१२) ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द'।
(१३) बावा हरकिशन सिंघ जी, प्रिंसीपल गुरु नानक खालसा कॉलेज, गुजरांवाला।
(१४) भाई त्रिलोचन सिंघ जी, (सुर सिंघ, जिला लाहौर)।
(१५) ज्ञानी हमीर सिंघ जी, अमृतसर।
(१६) पंडित करतार सिंघ जी दाखा, जिला लुधियाना।
(१७) जत्थेदार साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब।
(१८) जत्थेदार साहिब, तख्त श्री केसगढ़ साहिब।
(१९) जत्थेदार साहिब, तख्त श्री पटना साहिब।
(२०) प्रोफेसर गंगा सिंघ जी।
(२१) प्रोफेसर जोध सिंघ जी।
(२२) संत मान सिंघ जी, कनखल।
(२३) जत्थेदार तेजा सिंघ जी।
(२४) भाई रणधीर सिंघ जी।
(२५) प्रोफेसर तेजा सिंघ जी (कनवीनर)

इस सब-कमेटी के समागम ४-५ अक्तूबर १९३१, ३ जनवरी १९३२ और ३१ जनवरी १९३२ को श्री अकाल तख्त साहिब पर हुए, जिनमें निम्नलिखित सदस्य दर्शन देकर विचार में हिस्सा लेते रहे:-

अकाली कौर सिंघ जी, ज्ञानी शेर सिंघ जी, संत मान सिंघ जी निर्मले, प्रोफेसर गंगा सिंघ जी, जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब, जत्थेदार तख्त श्री केसगढ़ साहिब, ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द', भाई लाभ सिंघ जी ग्रंथी, ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, ज्ञानी हमीर सिंघ जी, बावा हरकिशन सिंघ जी एम. ए., जत्थेदार तेजा सिंघ जी, भाई त्रिलोचन सिंघ जी और दास (कनवीनर)।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सज्जन कभी-कभी दर्शन देते रहे:-

स. धर्म-अनंत सिंघ जी, प्रिंसीपल सिक्ख मिशनरी कॉलेज, स. भाग सिंघ जी वकील, गुरदासपुर, स. वसावा सिंघ जी, सचिव, शिरोमणि कमेटी, मास्टर तारा सिंघ जी (प्रधान, शिरोमणि अकाली दल) आदि।

यह खरड़ा इस रहु-रीत कमेटी द्वारा शिरोमणि कमेटी की सेवा में पेश किया जाता है। आशा है, आप इस खरड़े को पंथ की राय लेने के लिए छपवा कर प्रकाशित करोगे तथा राय आने पर शिरोमणि कमेटी के अधिवेशन में अंतिम स्वीकृति के लिए पेश करोगे।

इसके बाद शिरोमणि कमेटी की आज्ञानुसार ८ मई, १९३२ को इस खरड़े पर एक बार फिर विचार की गई। निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे:-

जत्थेदार तेजा सिंघ जी, संत तेजा सिंघ जी, ग्रंथी श्री ननकाणा साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी 'मुसाफ़र', ज्ञानी नाहर सिंघ जी, स. वसावा सिंघ जी, सचिव शिरोमणि कमेटी, भाई करतार सिंघ जी झब्बर, स. वरियाम सिंघ जी गरमूला (मैंबर इंचार्ज श्री ननकाणा साहिब), भाई प्रताप सिंघ जी पुस्तकों वाले, स. लाल सिंघ जी (शिरोमणि कमेटी), जत्थेदार मोहन सिंघ जी (श्री अकाल तख़्त साहिब) आदि।

इसके बाद कई सज्जनों के जोर देने पर खरड़े पर पुन: विचार करने के लिए रहु-रीत कमेटी का एक और सम्मेलन २६ सितंबर १९३२ को किया गया। इसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:-

ज्ञानी शेर सिंघ जी, ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, ज्ञानी हमीर सिंघ जी, भाई लाभ सिंघ जी, ग्रंथी श्री दरबार साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी, 'मुसाफ़र', भाई जोगिंदर सिंघ जी (उप जत्थेदार तख़्त श्री केसगढ़ साहिब), जत्थेदार तेजा सिंघ जी, ज्ञानी नाहर सिंघ जी तथा दास (कनवीनर)।

इनके अतिरिक्त संत तेजा सिंघ जी एम. ए. भी विचार में हिस्सा लेते रहे। कमेटी ने बड़े ध्यान से सारे खरड़े पर विचार की तथा इसको अच्छी तरह शोधा।

अब यह खरड़ा रहु-रीत कमेटी की ओर से शिरोमणि कमेटी की सेवा में फिर पेश किया जाता है। कृपा करके इस खरड़े को छपवा कर संगतों की सेवा में अंतिम बार राय देने के लिए भेजो। साथ ही इस खरड़े को विचारने और अंतिम प्रवानगी देने के लिए शिरोमणि कमेटी का विशेष अधिवेशन बुलाया जाए।

१ अक्तूबर, १९३२

दास,
तेजा सिंघ
कनवीनर, रहु-रीत कमेटी।

खरड़े सम्बंधी राय भेजने वाले सज्जनों एवं सभाओं की सूची

रहु-रीत के खरड़े संबंधी राय भेजने वाले सज्जनों के नाम—

१. भाई सज्जन सिंघ जी 'मुहाफ़िज', दफ़्तर गुरुद्वारा श्री हजूर साहिब जी, नांदेड़।

२. स. हज़ारा सिंघ जी 'ठेकेदार', भवानीगढ़ (पटियाला गवर्नमेंट)।

३. ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द', लाहौर।
४. भाई हरनाम सिंघ जी 'नाचीज़', ग्राम नौशहिरा सून सकेसर, जिला शाहपुर।
५. भाई प्रताप सिंघ जी पुस्तकों वाले, अमृतसर।
६. भाई राम सिंघ जी, डेरा बाबा मिशरा सिंघ, चौक लछमणसर, अमृतसर।
७. ज्ञानी नाहर सिंघ जी, 'असली कौमी दर्द', अमृतसर (पहला खरड़ा)।
८. ज्ञानी नाहर सिंघ जी 'असली कौमी दर्द', अमृतसर (दूसरी बार का)।
९. स. गंडा सिंघ जी जमादार पेंशनर, एग्जामिनर नकल फ़ारसी, दफ़्तर डी. सी., जालंधर शहर।
१०. वैद्य नौरंग सिंघ, स. गुरबचन सिंघ जी 'तांघी', अमृतसर।
११. भाई मेला सिंघ जी, गुरुद्वारा चुरस्ती अटारी, अमृतसर।
१२. भाई साहिब भाई काहन सिंघ जी, सरदार बहादर, नाभा।
१३. एक प्रेमी सज्जन।
१४. एक प्रेमी सज्जन।
१५. संत टहिल सिंघ जी, मजीठा (अमृतसर)।
१६. भाई नरैण सिंघ जी, मसीत पलकोट डाक. गढ़दीवाला (होशियारपुर)।
१७. भाई उत्तम सिंघ जी, चिटागांग (बंगाल) डाक: रेलवे बिल्डिंग, चिटागांग।
१८. एडीटर, खालसा ते खालसा एडवोकेट, अमृतसर।
१९. भाई अमरीक सिंघ जी, चूने वाले, गुजरांवाला।
२०. संत गुलाब सिंघ जी, खालसा अनंद भवन, मोगा (फिरोजपुर)।
२१. ज्ञानी हीरा सिंघ जी ढुडियाल (जेहलम)।
२२. भाई नंद सिंघ जी इंजीनियर मार्फत बाबा बखतावर लाल शर्मा (बठिंडा)।
२३. मा: बचन सिंघ जी 'बचन', सिधवां कलां (लुधियाना)।
२४. भाई बिशन सिंघ जी सुहाणा, ज्ञानी, दुआबा खालसा हाई स्कूल, जालंधर।
२५. भाई नाज़म सिंघ जी सधार, दीनापुर (पटना)।
२६. संत गुलाब सिंघ जी घोलीआं, मोगा।
२७. स. गंडा सिंघ जी 'जाचक', अमृतसर।
२८. मास्टर पूरन सिंघ जी अनंदपुरी, चौंक करोड़ी, अमृतसर।
२९. ज्ञानी बचित्तर सिंघ जी मार्फत खालसा ट्रेडिंग एजेंसी, कलकत्ता।
३०. भाई त्रिपत सिंघ जी, नागोकी सरली (अमृतसर)।
३१. ज्ञानी रण सिंघ जी, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, मीरपुर, बरास्ता जेहलम।
३२. भाई चतर सिंघ जी, गुरुद्वारा सारंबान शहर, मलाया द्वीप।
३३. भाई ठाकर सिंघ जी 'संसार', ग्राम फतहगढ़ घनईआ, डाक: खास, गुरदासपुर।
३४. पंडित करतार सिंघ जी दाखा (लुधियाना)।
३५. भाई प्रेम सिंघ जी ज्ञानी, खालसा हाई स्कूल, कल्लर (रावलपिंडी)।
३६. भाई गुरदित्त सिंघ जी 'दरस', चक्क नं. १३२, डाकखाना खास (मुलतान)।

३७. भाई सुंदर सिंघ जी, दुबेरन (रावलपिंडी)।
३८. ज्ञानी भगत सिंघ जी, खालसा हाई स्कूल, बाबा बकाला (अमृतसर)।
३९. भाई सरन सिंघ जी, ग्रंथी, गुरुद्वारा रतन तला, श्री गुरु सिंघ सभा, कराची।
४०. भाई छहिबर सिंघ जी, हैँड मास्टर, खालसा उपदेशक कॉलेज, यतीमखाना घरजाख (गुजरांवाला)।
४१. भाई मल्ल सिंघ जी खोसला, कशमीर स्टेट।
४२. डाक्टर तेजा सिंघ जी ज्ञानी, फतह चक्क (तरनतारन)।
४३. भाई गुरमुख सिंघ जी ग्रंथी, बडूंदी (लुधियाना)।
४४. भाई मोहन सिंघ जी वैद्य, तरनतारन (अमृतसर)।
४५. भाई जोध सिंघ जी 'कृपाण बहादर', अलोवाल (मलाया स्टेट)।
४६. भाई प्रेम सिंघ जी पेन्शनर, मांगट (गुजरात)।
४७. भाई महां बलबीर सिंघ अकाली, ग्राम पत्तो सिंघ वाली, डाकखाना खास, (फिरोजपुर)।
४८. भाई मनोहर सिंघ जी, पहला हैँड क्लर्क, स्थानीय गुरुद्वारा कमेटी, अमृतसर।
४९. भाई महिंदर सिंघ जी, प्रधान गुरुद्वारा कमेटी, समाध भाई, ग्राम अणूके (फिरोजपुर)।
५०. भाई गुरबचन सिंघ जी **(Ketrygess M. P. Nett Jormun'e B.Sc.)**

रहु-रीत के खरड़े संबंधी निम्नलिखित पंथक जत्थों की तरफ से राय पहुंची:-

१. गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, खडूर साहिब (अमृतसर)।
२. खालसा कमेटी (स्कूल), होती।
३. श्री गुरु सिंघ सभा, गुजरांवाला।
४. सिक्ख स्त्री विद्यक कमेटी, शांकर (जालंधर)।
५. संगत तख्त श्री केसगढ़ साहिब, अनंदपुर।
६. श्री गुरु सिंघ सभा, गुज्जरखान।
७. श्री गुरु सिंघ सभा, चक्क झुमरा मंडी (लायलपुर)।
८. श्री गुरु सिंघ सभा, कुंतरीला (रावलपिंडी)।
९. अकाली जत्था, शहर अमृतसर।
१०. सिक्ख टीचर्ज़ ऐसोसिएशन खालसा स्कूल, खारिआ (गुजरात)।
११. खालसा सेंट्रल दीवान, शिरोमणि पंथ मलौणी, जत्था माझा।
१२. श्री गुरु सिंघ सभा, ढुढिआल (जेहलम)।
१३. श्री गुरु सिंघ सभा, बंबई।
१४. गुरु नानक खालसा मिडल स्कूल, डेहरा साहिब, जामा राय।
१५. खालसा दीवान, लाहौर छावनी।
१६. सेंट्रल सिक्ख नौजवान सभा, बरमा टौजी **(S. S. S.)** एवं खालसा दीवान, बरमा।
१७. सचिव, अकाली जत्था, तहसील अंबाला।
१८. श्री गुरु सिंघ सभा, खुशाब (सरगोधा)।
१९. पैसेफिक कोस्ट खालसा दीवान, स्टाकटन (अमेरिका)।

२०. गुरुद्वारा कमेटी, मोमिओ (बरमा)।
२१. जत्थेदार, बुड्ढा दल निहंग सिंघां चलदा वहीर, धोबी मंडी, लाहौर।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिक्ख रहित मर्यादा

सिक्ख की तारीफ़

जो स्त्री या पुरुष एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा दस गुरु साहिबान की बाणी और शिक्षा एवं दशमेश जी के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।

सिक्ख की रहिणी दो प्रकार की है—व्यक्तिगत तथा पंथक।

व्यक्तिगत रहिणी

(१) नाम बाणी का अभ्यास। (२) गुरमति की रहिणी। (३) सेवा।

(१) नाम बाणी का अभ्यास

(१) सिक्ख अमृत वेले (पहर रात रहती) जाग कर स्नान करे तथा एक अकाल पुरख का ध्यान करता हुआ 'वाहिगुरु' नाम जपे।

(२) नितनेम का पाठ करे। नितनेम की बाणियां ये हैं:-

जपु, जापु तथा १० सवय्ये ('स्रावग सुध' वाले)। ये बाणियां अमृत वेले पढ़नी।

सो दरु रहरासि—सायंकाल सूर्यास्त होने पर पढ़नी। इसमें ये बाणियां शामिल हैं:-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में लिखे हुये नौं शबद (*'सो दरु'* से लेकर *'सरणि परे की राखहु सरमा'* तक), बेनती चौपई पातशाही १० (*'हमरी करो हाथ दै रच्छा'* से लेकर *'दुसट दोख ते लेहु बचाई'* तक), सवैया (*'पांइ गहे जब ते तुमरे'*) तथा दोहरा (*'सगल दुआर कउ छाडि कै'*), अनंद की पहली पांच पउड़ियां और अंतिम एक पउड़ी,* मुंदावणी तथा सलोक महला ५ *'तेरा कीता जातो नाही।'*

सोहिला—यह बाणी रात को सोने के समय पढ़नी।

अमृत वेले तथा सो दरु समय के नितनेम के उपरांत अरदास करनी आवश्यक है।

*(३) (क) अरदास** यह है:-*

ੴ वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

स्री भगौती जी सहाइ ॥ वार स्री भगौती जी की पातशाही १० ॥

** इस अवसर पर या दीवान की समाप्ति पर जो अनंद साहिब का पाठ किया जाता है उसका भाव केवल गुरु साहिब के मिलाप के लिए हर्ष और धन्यवाद करना होता है।*

***यह अरदास का नमूना है। "प्रिथम भगौती" वाले शबद और "नानक नाम" वाली अंतिम दो पंक्तियों में कोई तबदीली नहीं हो सकती।*

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ स्री हरिराइ ॥ स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठै सभि दुख जाइ ॥ तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ ॥ सभ थाईं होइ सहाइ ॥ दसवां पातशाह स्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी! सब थाईं होइ सहाइ ॥ दसां पातशाहीआं दी जोत स्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरू !

पांच प्यारों, चारों साहिबजादों, चालीस मुक्तों, हठियों, जपियों, तपियों, जिन्होंने नाम जपा, बांट कर छका, देग चलाई, तेग वाही, देख कर अनदेखा किया, उन प्यारों, सचियारों की कमाई का ध्यान धर के, खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु !

जिन सिंघों-सिंघणियों ने धर्म हेत शीश दिये, बंद-बंद कटाये, खोपरियां उतरवाईं, चरखियों पर चढ़े, आरों के साथ चिराए गए, गुरुद्वारों की सेवा के लिये कुर्बानियां कीं, धर्म नहीं हारा, सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई, तिनकी कमाई का ध्यान धर के खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु!

पांचों तख्तों, समूह गुरुद्वारों का ध्यान धर के बोलो जी वाहिगुरु!

प्रिथमे सरबत्त खालसा जी की अरदास है जी, सरबत्त खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु चित्त आये, चित्त आने का सदका सर्व सुख हो। जहां-जहां खालसा जी साहिब तहां-तहां रछिआ रियायत, देग तेग फ़तह, बिरद की पैज, पंथ की जीत, सिरी साहिब जी सहाइ, खालसे जी के बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरु!

सिक्खों को सिक्खी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानों के सिर दान, नाम दान, श्री अमृतसर जी के स्नान, चौंकियां, झंडे, बुंगे, युगो युग अटल, धर्म का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु!

सिक्खों का मन नीचा, मति ऊंची, मति का रखवाला आप वाहिगुरु।

हे अकाल पुरख अपने पंथ के सदा सहायी दातार जीओ! श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों-गुरधामों के, जिनसे पंथ को विछोड़ा गया है, खुले दर्शन-दीदार और सेवा-संभाल का दान ख़ालसा जी को बख्शो।

हे निमाणों के मान, निताणों के ताण, निओटों की ओट, सच्चे पिता, वाहिगुरु! आपके हजूर--*की अरदास है जी!

अक्षर ज्यादा-कम, भूल-चूक क्षमा करना। सरबत्त के कारज रास करने।

वही प्यारे मेल जिनके मिलने से तेरा नाम चित्त आये। नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

इसके उपरांत अरदास में शामिल होने वाली सारी संगत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे आदर के साथ माथा टेके और फिर खड़े होकर 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलाये। उपरांत 'सति श्री अकाल' का जयकारा गजाया जाये।

(ख) अरदास होते समय संगत में हाज़िर सारे स्त्री-पुरुषों को हाथ जोड़ कर खड़े होना चाहिए।

यहां उस बाणी का नाम लो जो पढ़ी है या जिस कार्य के लिए एकत्रता या संगत जुड़ी हो, उसका ज़िक्र उचित शब्दों में करो।

जो सज्जन श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबे बैठा हो वह भी उठ कर चंवर करे।
(ग) अरदास करने वाला श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के सन्मुख खड़े होकर, हाथ जोड़ कर अरदास करे। यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी मौजूद न हों तो किसी ओर मुंह करके अरदास करो, स्वीकृत है।
(घ) जब कोई विशेष अरदास किसी एक या अतिरिक्त व्यक्तियों की ओर से हो तो उनके बिना संगत में बैठे अन्य का उठना आवश्यक नहीं।

४. साध संगत में जुड़ कर गुरबाणी का अभ्यास

गुरुद्वारे

(क) गुरबाणी का असर साध संगत में बैठने से अधिक होता है। इसलिये सिक्ख के लिये उचित है कि सिक्ख संगतों के जोड़-मेल के स्थानों-गुरुद्वारों के दर्शन करे और साध संगत में बैठ कर गुरबाणी से लाभ उठाये।
(ख) गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नित्य-प्रति हो। बिना विशेष कारण के (जबकि प्रकाश जारी रखने की आवश्यकता हो) रात्रि को प्रकाश न रहे। साधारणत: रहरासि के पाठ के बाद सुख-आसन किया जाये। जब तक ग्रंथी या सेवादार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सेवा के लिये हाज़िर रह सके या पाठियों, दर्शन करने वालों की आवाजाही रहे अथवा बेअदबी का खतरा न हो, तब तक प्रकाश रहे। उपरांत सुख-आसन कर देना उचित है, ताकि बेअदबी न हो।
(ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्मान से प्रकाशा, पढ़ा तथा संतोखा जाये। प्रकाश के लिए आवश्यक है कि स्थान साफ-सुथरा हो, ऊपर 'चांदनी' हो। प्रकाश 'मंजी साहिब' पर साफ-सुथरे वस्त्र बिछा कर किया जाए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को संभाल कर प्रकाशन के लिए गदेले आदि सामान प्रयोग किये जायें और ऊपर के लिए रुमाल हो। जब पाठ न होता हो तो ऊपर रुमाल पड़ा रहे। प्रकाश के समय चंवर भी चाहिये।
(घ) ऊपर बताये सामान के अलावा धूप या दीये जला कर आरती करनी, भोग लगाना, ज्योतें जगानी, घंटे खड़काना आदि कर्म गुरमति अनुसार नहीं। हां, स्थान को सुगंधित करने के लिए फूल, धूप आदि सुगंधियां प्रयोग करना विवर्जित नहीं। कमरे में रोशनी के लिए तेल, घी या मोमबत्ती, बिजली, लैम्प आदि जला लेने चाहिये।
(ङ) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समान (तुल्य) किसी पुस्तक को स्थापित नहीं करना। गुरुद्वारे में कोई मूर्ति-पूजा अथवा अन्य गुरमति के विरुद्ध कोई रीति या संस्कार न हो, न ही कोई अन्य मत का त्योहार मनाया जाये। हां, किसी अवसर अथवा एकत्रता को गुरमति के प्रचार के लिये उपयोग में लाना अयोग्य नहीं।
(च) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पंघूड़े (पीढ़ा साहिब) के पावों को मुट्ठियां भरना, दीवारों या चबूतरों पर नाक रगड़ना या मुट्ठियां भरना, मंजी साहिब के नीचे पानी रखना, गुरुद्वारों में मूर्तियां (बुत) बनानी अथवा रखनी, गुरु साहिबान या सिक्ख बुजुर्गों की तस्वीरों के आगे माथे टेकने, ऐसे कर्म मनमति हैं।
(छ) एक से दूसरे स्थान श्री गुरु ग्रंथ साहिब ले जाते समय अरदास करनी चाहिये। जिसने सिर

पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब उठाया हो, वह नंगे पांव चले, परंतु यदि किसी मौके जोड़े पहनने की अति आवश्यकता पड़ जाए तो भ्रम नहीं करना।

(ज) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को अरदासा सोध कर प्रकाश किया जाये। प्रकाश करते समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से एक शबद का वाक लिया जाये।

(झ) जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सवारी आए तो चाहे आगे प्रकाश हुआ हो या न, प्रत्येक सिक्ख को सम्मान के लिए उठ खड़े होना चाहिये।

(ञ) गुरुद्वारे के अंदर जाते समय जोड़े बाहर उतार कर, स्वच्छ होकर जाना चाहिये। यदि पांव मैले या गंदे हों तो जल से धो लेने चाहिये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब अथवा गुरुद्वारे को अपनी दाहिनी ओर रख कर परिक्रमा करनी चाहिए।

(ट) गुरुद्वारे के अंदर दर्शनों के लिए जाने के लिए किसी देश, मजहब, जाति वाले को मनाही नहीं, परन्तु उसके पास सिक्ख धर्म द्वारा विवर्जित तंबाकू आदि कोई वस्तु नहीं होनी चाहिये।

(ठ) गुरुद्वारे अंदर जाकर सिक्ख का पहला कर्म श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी आगे माथा टेकना है। उपरांत गुरु रूप साध संगत के दर्शन करके सहज से 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलाई जाये।

(ड) संगत में बैठने के लिये भी सिक्ख-असिक्ख, छूत-छात, जात-पात, ऊंच-नीच का भ्रम या भेद-भाव नहीं करना।

(ढ) किसी मनुष्य का सतिगुरों के प्रकाश के समय अथवा संगत में गदेला, आसन, कुर्सी, चौकी, चारपाई आदि लगा कर बैठना अथवा किसी और भेदभाव से बैठना मनमति है।

(ण) संगत में अथवा सतिगुरों के प्रकाश के समय किसी सिक्ख को नंगे सिर नहीं बैठना चाहिये। संगत में सिक्ख स्त्रियों के लिये पर्दा करना अथवा घूंघट निकालना गुरमति विरुद्ध है।

(त) तख़्त पांच हैं :-

१. श्री अकाल तख्त साहिब, अमृतसर।, २. तख़्त श्री पटना साहिब।
३. तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, अनंदपुर।, ४. तख़्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़।
५. तख़्त श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो)।

(थ) तख्तों के खास स्थान पर केवल रहितवान अमृतधारी सिंघ (सिंघ या सिंघनी) ही चढ़ सकते हैं। (तख्तों पर पतित और तनखाहिये सिक्ख के बिना हर एक प्राणी मात्र, सिक्ख अथवा गैर-सिक्ख की अरदास हो सकती है।)

(द) प्रत्येक गुरुद्वारे में निशान साहिब किसी ऊंचे स्थान पर लगा हो। निशान साहिब के पोशाके का रंग बसंती या सुरमई हो और निशान साहिब के सिर पर सरब-लोह का भाला या खंडा हो।

(ध) गुरुद्वारे में नगाड़ा हो, जो समय पर बजाया जाए। . . . *शेष अगले अंक में।* 

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर से प्रकाशित किया। संपादक : सिमरजीत सिंघ। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०३-२०१०